आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

प्रतिध्वनि

... पीपीएसी की सांझी सम्पदा

हिन्दी पखवाड़ा - 2022

PPAC

Analysis • Knowledge • Information

पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ

पीपीएसी, नई दिल्ली-110003

प्रतिध्वनि

... पीपीएसी की सांझी सम्पदा

प्रधान संरक्षक

डी. के. ओझा
महानिदेशक, पीपीएसी

संपादक मंडल

अध्यक्ष : डॉ. पंकज शर्मा, अपर निदेशक (पीपीएसी)
सदस्य : डॉ ईश्वर सिंह, हिन्दी अधिकारी (ओआईएसडी)
बिशन सिंह, हिन्दी सलाहकार

संपादक सहयोग

रुनिता गोस्वामी, अपर निदेशक (पीपीएसी)
शिव पार्वती, सहायक निदेशक (पीपीएसी)
विनोद यादव, सहायक निदेशक (पीपीएसी)

विशेष आभार

शोभना श्रीवास्तव, उप निदेशक (पेट्रोलियम मंत्रालय)
गौरव कटियार, उपनिदेशक (पेट्रोलियम मंत्रालय)
एवं समस्त पीपीएसी परिवार

रुप-रेखा

विनोद यादव, सहायक निदेशक (पीपीएसी)

संदेश

भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है । अपनी बात कहने और दूसरे की बात समझने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है । भारत एक विविधतापूर्ण देश है जिसमें लोगों द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं, ऐसे में किसी एक भाषा को चुनना काफी मुश्किल था । चूंकि हिंदी भाषा पूरे भारत में अन्य भाषाओं से अपेक्षाकृत अधिक बोली और समझी जाती है, इसलिए संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया ।

26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू होते ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो गया । राजभाषा नीति का अनुपालन करना हम सभी भारतीयों का संवैधानिक तथा नैतिक दायित्व है । पीपीएसी भारत सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन प्रतिबद्धता के साथ कर रहा है और अपने कार्यालय में इसे लागू करने के लिए सतत प्रयत्नशील है ।

अतएव, राजभाषा दायित्वों की पूर्ति हेतु आप सभी को हिन्दी पुस्तिका "प्रतिध्वनी" सौपते हुए मुझे काफी खुशी हो रही है। "प्रतिध्वनी" में पीपीएसी कर्मचारियों की स्वरचित लेख शामिल हैं जो कि पीपीएसी के सभी कर्मचारियों की बहुमुखी प्रतिभा तथा राजभाषा के प्रति उनके लगाव को दर्शाती हैं । इन कर्मचारियों में अनेक गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र से हैं । इसके लिए में सभी कर्मचारियों को बधाई देना चाहता हूँ ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पीपीएसी में राजभाषा हिंदी की उन्नति तथा प्रसार को गति प्रदान करने में "प्रतिध्वनी" काफी सहायक सिद्ध होगी और राजभाषा के क्षेत्र में और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती रहेगी ।

जय हिन्द , जय हिन्दी ।

धन्यवाद ।

(डी के ओझा)
महानिदेशक
पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं
01	अत्यधिक चिंतन – कारण और समाधान	डी के ओझा	3
02	भारत में हिंदी भाषा का प्रयोग और लोकसेवा	गौरव कटियार	5
03	योग एक वरदान	विवेक विनीत	7
04	बापू का एक ही सपना स्वच्छ एवं सुन्दर हो भारत अपना	तुषार जैन	9
05	सुकून की तलाश में	रविन्द्र कुमार	11
06	इतिहास में भारतीय महिलाएं	शिव पार्वती	12
07	स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत	रंजीत सिंह	15
08	आइए जानते हैं क्या है टेलीकॉम टेक्नोलॉजी में 5G	तारकेश्वर दास	17
09	गुरुत्वाकर्षण– एक चमत्का और हमारे ग्रह की जीवन रेखा	संजय वर्गीस	20
10	किताबे पढ़ने की आदत	रुनीता गोस्वामी	22
11	भारत के विकास में विज्ञान	पवन सैन	23
12	पेड़ ही है प्राण	लखन लाल गोहारे	25
13	मेरे दादा द्वारा सुनाई गई ''हाउस ऑफ गॉड'' पर एक लघु कथा	विजय कंसल	26
14	माफी	सपना वर्मा	28
15	मेरी अमेरिका यात्रा डायरी	पूनम मित्तल	29
16	भूटान यात्रा का अनुभव	निरेन भट्टाचार्य	31
17	कटरा में मां बैष्णोदेवी के दर्शन	मालती शर्मा	33
18	हिंदी	तिलक राज दुआ	37
19	मेरे गुरु	सरस्वती जोशी	38
20	भविष्य के रिश्ते	घनश्याम	40
21	भारत मेरा सबसे प्यारा	रोली श्रीवास्तव	41
22	आयल एंड गैस डाटा का सेनापति–पीपीएसी	ऋत्विक कुमार हातियाल	42
23	वो दिन	सूर्यभान मल	43
24	भारतीय महिला क्रिकेट	विवेक पंत	44
25	हिन्दुस्तान कहलाती हिंदी	विनोद यादव	46
26	हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए कार्य–1		47
27	हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए कार्य–2		47
28	हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए कार्य–3... जारी है		48
25	तृतीय पेट्रोलियम राजभाषा सम्मेलन, नई दिल्ली		49
26	सूरज, हवा और सनबर्ड्स	डॉ पकंज शर्मा	50
27	द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत		52
28	प्राकृतिक गैस का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण पर प्रभाव	डॉ राजेश शर्मा	53
29	स्वच्छ ऊर्जा के लिए भारत का मार्ग	मोहिंदर वर्मा	54
30	पीपीएसी की प्रासंगिकता: समकालीन युग में ऊर्जा परिदृश्य	अवन्तिका गर्ग तायल	55

अत्यधिक चिंतन – कारण और समाधान

डी के ओझा
महानिदेशक – पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

ओवरथिंकिंग या ज्यादा सोचना कुछ स्थितियों में बेहतर होता है । नए विचारों का सृजन एकाग्र और समयबद्ध चिंतन से ही होता है । लेकिन एक सीमा से ज्यादा चिंतन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

जीवन में सफलता का मूलमंत्र है, समयबद्ध होकर योजनानुसार क्रियान्वयन । समय, संसाधन और विवेक का सदुपयोग करके बड़ी सफलताएं अर्जित की जा सकती हैं । प्रतिभावान होते हुए भी सही समय पर सही निर्णय न ले पाने से व्यक्ति जीवन में योग्य सफलता हासिल नहीं कर पाते हैं ।

अक्सर लोग अपने द्वारा अपेक्षित कार्यों की एक लंबी सूची बनाकर इतने बेचौन हो जाते हैं कि वे किसी निर्णय तक नहीं पहुँच पाते । कार्यों की लंबी सूची उन्हें दुविधा में ड़ाल देती है कि शुरुआत कहां से की जाए । उनका विवेक उन्हें भ्रमित कर देता है । किसी निर्णय तक पहुंचने से पहले वे परिणाम को अपनी कल्पना में साकार मानते हैं और पछताते हैं । किसी घटना को लेकर इतना चिंतन करने लगते हैं या किसी परेशानी ध समस्या के बारे में इतना सोचते रहते हैं कि समाधान ही नहीं निकल पाता । डब्ल्यू एच ओ के एक शोध के अनुसार अत्यधिक चिंतन "ओवर थिंकिंग" व्यक्ति में मानसिक विकार उत्पन्न कर देता है जो व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है । वैश्विक स्तर पर 25–35 वर्ष की उम्र के लगभग 75: और 45–55 वर्ष की उम्र के 50: लोग अत्यधिक चिंतन से होने वाले मानसिक तनाव ओर अवसाद (डिप्रैशन) के शिकार होते हैं ।

परफेक्शनिजम अर्थात पूर्णतावादी मानसिकता इस मानसिक तनाव और अवसाद का एक महत्वपूर्ण कारक है । स्वयं से कुछ अधिक आशा–अपेक्षाएं रखना, व्यक्ति को असंतोष की तरफ धकेल देता है और व्यक्ति दूसरों के प्रति भी गहरे मलाल (शिकायत) की स्थिति में रहता है । इस मनरूस्थिति में कोई व्यावहारिक योजना नहीं बन पाती, जो ठोस उपलब्धियों को अंजाम दे सके, बल्कि कल्पना व योजना स्तर पर ही बातें उलझी रह जाती हैं । दूसरे व्यक्तियों की इच्छाओं व कामनाओं के अनुरुप चलना व अपनी मंजिल की ओर बढ़ना किसी के लिए भी संभव नहीं होता है ।

विवेकशील, समयबद्ध चिंतन और मानसिक तनाव में काफी अंतर होता है । हमारा दिमाग कंप्यूटर के प्रौसेसर की तरह है जिसमें एक दिन में लगभग 7000 विचार आते हैं । हमारा मस्तिष्क ही इन विचारों की समीक्षा करता है और सही–गलत, उपयुक्त, समयानुकूल निर्णय लेने में सक्षम है । इस निर्णय से हमें स्फूर्ति व ऊर्जा के साथ अपेक्षित सफलताएं भी मिलती हैं । सोचिए कि यदि मस्तिष्क एक ही बात को बार–बार सोचता रहे तो चिंता बढ़ेगी और तनाव एवं अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी । व्यक्ति की उत्पादन क्षमता (प्रोडक्टिविटी) पर असर पड़ता है और धीरे–धीरे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव दिखाई देने लगता है । व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और परस्पर वैमनस्य बढ़ जाता है ।

किसी विषय विशेष पर चिंतन एक सकारात्मक व्यवहार है लेकिन समस्या तब होती है जब हम सिर्फ चिंतन करें और उस विचार को कार्यान्वित न कर पाएं । जीवन के हर परिवेश यथा दृ व्यक्तिगत, सामाजिक, कार्यालय, आर्थिक आदि पर इस उहा–पोह की मनरूस्थिति का प्रतिकूल असर दिखाई देने लगता है । जीवन की गुणवत्ता (फनंसपजल वि सपमि) प्रभावित होने लगती है । कभी–कभी अत्यधिक चिंतन विभिन्न मानसिक बीमारियों यथा दृ एंग्जाएटी, तनाव,

डिप्रैशन आदि का कारण बन जाता है । प्राथमिकताओं का अभाव भी इस बीमारी का एक प्रमुख कारण है । मन में नकारात्मक ऊर्जा का जन्म होता है जिसके भंवर में वह उलझ जाता है और मन में असंतोष की स्थिति रहती है ।

अत्यधिक चिंतन के कुछ खास लक्षण निम्नवत हैंरू

1. भूतकाल में लिए गए निर्णयों को लेकर पछताना
2. वर्तमान की चुनौतियों को लेकर चिंतित रहना
3. विपरीत परिस्थियों की कल्पना करना
4. सफलता के सपने, उत्कर्ष के ताने–बाने में खोए रहना
5. समयबद्ध निर्णय नहीं लेना
6. सिद दर्द, एकाग्रता की कमी, अनिद्रा, भूख न लगना, उच्च रक्तचाप आदि ।

इन परिस्थितियों से बचने के कुछ आसान उपाय करने से हम अपनी उपयोगिता बनाए रख सकते हैं:

1. काम को ज्यादा महत्व दें । सोचने और क्रियान्वयन की भी एक समयसीमा निर्धारित करें ।
2. बहुत ज्यादा लोगों से राय–मशवरा न करें इससे समाधान की बजाए दिगभ्रमित होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं ।
3. मानसिक व शारीरिक व्यायाम जरुर करें । योग व प्राणायाम भी वैचारिक शक्तियों को बढ़ाने में मददगार होते हैं ।
4. स्वंय की क्षमताओं पर भरोसा कीजिए । जरुरत पड़ने पर विषय विशेषज्ञ से सलाह अवश्य लेनी चाहिए ।
5. हर प्रश्न का हल तुरंत करने की इच्छा न रखें । समय के साथ सभी समस्याओं का हल निकल आएगा ।
6. एकाग्रचित्त होकर सकारात्मक सोचें । मनपंसद संगीत, फिल्म व किताब पढ़े । घनिष्ठ मित्रों के साथ कुछ आनन्द के क्षण व्यतीत करें ।

जीवन के इस कर्तव्यपथ पर अपने कार्य के औचित्य, प्राथमिकता, अपने स्वभाव व प्रकृति के अनुसार निर्णय लेने चाहिएं न कि भविष्य के कालकपोलों की दिशाहीन उड़ान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए । यदि हमारे मानक सत्य, धर्म, कर्तव्य, मानवता व समाज उपयोगी हैं तो निश्चय ही विवेकशील हृदय से सार्थक निर्णय लेने में देर नहीं करनी चाहिए ।

भारत में हिंदी भाषा का प्रयोग और लोकसेवा

गौरव कटियार (भारतीय आर्थिक सेवा)
उप–निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी प्रभाग पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय
(क क्षेत्र)

जैसा कि सर्वविदित है कि भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा विचारों व भावों का आदान प्रदान किया जाना संभव होता है। हमारे प्यारे देश भारत में लगभग 120 भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं उसमें से 44 प्रतिशत हिंदी बोलते हैं जिनकी संख्या 52 करोड़ से ऊपर है (जनगणना 2011 के अनुसार)। यद्यपि मातृभाषा और बोली–बानी के सम्बन्ध में कोई विरोध या परस्पर प्रतिस्पर्द्धा नहीं होनी चाहिए, और भारत जैसे बहुसांस्कृतिक राष्ट्र में कोई समस्या होती भी नहीं है। अपने देश में अनेक बोलियों व भाषाओं के लोग परस्पर सौहार्द्ध पूर्ण तरीके से रहते हैं और अलग अलग भाषाओं के लोगों के मध्य संवाद की अर्न्तक्रिया भी होती है यहाँ की भाषायी बुहलता के बारे में कहा गया है कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।

किन्तु इन अनेक भाषाओं ओर बोलियों के बीच में एक ऐसा धागा है हिन्दी के रूप में, जो पूरे देश की आंचलिक सांस्कृतियों रूपी मोतियों को एक माला के रूप में सजाकर भारत माता की प्रतिमा रूपी एकता को सुशोभित करता है। देश के किसी भी प्रांत में, शहर–ग्रामीण पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण, पठारी, पहाड़ी, तटीय, मैदानी, सभी, यदि किसी एक भाषा के सहारे भ्रमण या संवाद किया जा सकता है तो वह हिंदी भाषा ही है। यद्यपि देश के सभी आंचलों में हिंदी बोलने वाले लोग उतने अधिक नहीं होंगे जितने कि देश की औसत हिंदी भाषी लोग हैं। फिर भी हिंदी भाषा इतनी सक्षम है कि देश के प्रत्येक कोने में इतने लोग अवश्य मिल जाएंगे कि विचार प्रकट करना सुनिश्चित हो जाता है।

क्षेत्रीय भाषाओं की अपनी संख्यात्मक व भौगोलिक व्यापकता की सीमाएँ हैं, यद्यपि उनसे कोई विरोध नहीं है किन्तु अधिकांश देशवासियों को एक भाषा के सूत्र में बाँधने का काम कोई भी क्षेत्रीय भाषा अकेले नहीं कर सकती। यह केवल हिंदी के माध्यम से ही संभव है। जो अकेले ही देश की लगभग आधी जनसंख्या के द्वारा बोली जाती है। एक बड़ी उपलब्धि के साथ–साथ एक बड़ी जिम्मेदारी भी है हिंदी के कंधों पर, एक बड़ी जनसंख्या को संवाद के माध्यम से एक सूत्र में जोड़े रखने की। और यह जिम्मेदारी न केवल हिंदी भाषी जनसमुदाय बल्कि संविधान विशेषज्ञों और कानून निर्माताओं ने भी समझी है। भारतीय संविधान में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रावधान किए गए हैं, जो मुख्यतः अनुच्छेद 351, 350, 349 तथा 343 में वर्णित हैं।

जहाँ तक सरकारी दफतरों में कार्यप्रणाली व पत्राचार की बात है तो यहाँ भी हिंदी की भूमिका बहुत बड़ी है। यद्यपि लिखने व पढ़ने में हिंदी का प्रयोग कम होता है किन्तु बोलचाल में, सभाओं के दौरान चर्चा में, मौखिक निर्देश देने इत्यादि में हिंदी का प्रयोग बहुतायत होता है। क्योंकि जो विचार या भाव व्यक्ति/अधिकारी/कर्मचारी व्यक्त करना चाहता है वह अपनी मातृभाषा में ही सर्वोत्तम तरीके से व्यक्त कर सकता है और सामने वाले को समझा सकता है। हिंदी भाषी व्यक्तियों की संख्या अधिक होने की वजह से यह कार्य हिंदी में ही अधिकतम सफलता पूर्वक किया जाता है। जैसा कि कहा गया है –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।

किन्तु लोकसेवक के रूप में सरकारी कर्मचारियों/अधिकारियों की जिम्मेदारियाँ अधिक हैं। सरकारी कामकाज में न केवल मौखिक बल्कि लिखित पत्राचार के रूप में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दने की आवश्यकता है। अनेक जनमानस से जुड़े कार्य जैसे जन शिकायतों का निस्तारण, सूचना का अधिकार, सरकारी नीतियों के मसौदे पर जनमत/विचार इत्यादि का पत्राचार जितना संभव हो सके

(यदि एक प्रेषक/प्राप्तकर्ता हिंदी भाषी है) हिंदी में ही करना चाहिए, तभी जानकारी अपने असली अर्थ को इसके प्राप्तकर्ता तक पहुँचा पाएगी। मंत्रालयों/कार्यालयों के आधिकारिक इलेक्ट्रानिक मुख्य प्रष्ठ को प्रमुख रूप से हिंदी में रखना चाहिए और वैकल्पिक सुविधा के रूप में अन्य भाषा में उपलब्ध कराना चाहिए।

सभी नीतिगत पत्र, योजनाएँ, संपर्क सूत्र, वार्षिक रिपोर्ट इत्यादि जो जन प्रचलन में लाया जा सकता है, हिंदी भाषा में अवश्य उपलब्ध कराया जाना चाहिए। कार्यालय के शीर्ष अधिकारी अपने स्तर पर स्वविवेक से कुछ प्रतिशत पत्राचार को लक्ष्य बनाकर अधीनस्थ कर्मचारियों को हिंदी प्रोत्साहन हेतु बढ़ावा दे सकते हैं, तथा लक्ष्य पूरा होने पर पुरस्कृत किया जा सकता है। हिंदी भाषा में किए गए कार्यों की कार्यालयी समीक्षा केवल वार्षिक (हिंदी पखवाड़ा के दौरान) न होकर समय–समय पर होती रहनी चाहिए।

कार्यालयों के द्वारा अपने अधिकार क्षेत्र में कुछ योजनाएँ या कदम उठाए जा सकते हैं, जैसे प्रत्येक माह में सर्वश्रेष्ठ एक " टिप्पणी " , "कार्यालय ज्ञापन" जो हिंदी में लिखा गया हो पुरस्कृत किया जाए।

यदि सरकारी क्षेत्र/लोकसेवा क्षेत्र/ लोक उद्यम क्षेत्र के जिम्मेदार व्यक्ति अपने–अपने स्तर पर क्षमताओं व प्रयासों का विस्तार करते हुए हिंदी को बढ़ावा देने का कार्य करंगे तो न केवल भारत वर्ष के और अधिक जनमानस की सेवा हो सकेगी, गुणवत्ता बढ़ेगी बल्कि इस देश की एकता को बढ़ाने में भी बहुत कारगर कदम होगा। यद्यपि हिंदी को जितना ऊँचा स्थान मिलना चाहिए अभी नहीं मिला है लेकिन संभावना और क्षमताओं को देखते हुए यह संभव है। बिना किसी अन्य भाषा का नाम (इस पूरे लेख में) लिए हुए, किसी भाषा को हिंदी की प्रतिस्पर्द्धी न मानते हुए यही आवाह्न करता हूँ कि हिंदी एक दिन सम्पूर्ण भारत वर्ष की सर्वसम्मत जनभाषा अवश्य बनेगी।

"मजिल तो हमें मिल ही जाएगी, भटक–भटक के ही सही।
गुमराह तो वो हैं, जो घर से निकले ही नहीं।"

योग एक वरदान

विवेक विनीत
संयुक्त निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

मनुष्य एक विवेकशील और कर्मशील प्राणी है तथा भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में कहा है कि "योगः कर्मसु कौशलम" अर्थात् कर्मों में कुशलता ही योग है अर्थात कार्य को विवेक से जोड़ने का काम योग करता है ।

योग भारतीय ज्ञान की हजारों साल पुरानी एक अमूर्त विरासत है जिसे कई महर्षियों ने द्वारा पल्लवित पुष्पित कर इसे और समृद्धशाली बनाया गया है, जिनमें सर्वप्रमुख पतंजलि (योगसूत्र) तथा वेदव्यास (योग भाष्य) है। यद्यपि जनमानस के द्वारा योग को आत्मसात किये जाने में वेदांत, बौद्ध , जैन आदि दर्शनो का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके अनुसार योग शरीर और मन के भावों के बीच सामंजस्य और नियंत्रण स्थापित करता है तथा हमारे अंदर के जीवन शक्ति और ऊर्जा की समझ विकसित करता है।

औद्योगिक क्रांति के बाद से ही अत्याधिक भौतिकता मानव के जीवन शैली का पर्याय बनती जा रही है। सूचना क्रांति ने मानव के मानसिक भागदौड़ को और तीव्र कर दिया है। तनाव प्रदूषण चुपके से हमारे दिनचर्या में घुस आया है । एक सर्वेक्षण के अनुसार 80 के दशक में एक मानसिक रोगी को जितना तनाव होता था आज इतना तनाव एक बच्चे को होता है । इन्हीं परिस्थितियों में योग आधुनिक मनुष्य के मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक उन्नति के लिए वरदान साबित हो रहा है।

योग धर्म, आस्था, अंधविश्वास से परे एक विज्ञान है जो जीवन जीने की कला बताने के साथ ही साथ पूर्ण चिकित्सा पद्धति भी है जिसमे इसके आठ अंगो दृ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारण, प्रत्याहार, ध्यान तथा समाधि, का अभ्यास एक साथ किया जाता है । श्वास नियमों तथा आत्मनिरिक्षण पर विशेश ध्यान दिया जाता है ।

योग शरीर में लचीलापन लाकर , मांस पेशियों को मजबूत बनाकर, प्रतिरक्षा तंत्र को सुधार कर, शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि कर मनुष्य को चिरायु बनने में मदद करता है। विवेक शीलता , संयम एवं एकाग्रता बढ़ाता है। मानव ज्यादा सचेत और जागृत जीवन जीता है। स्वयम की भावनाओं के विश्लेषण में योग महत्वपूर्ण साबित हुआ है तथा यह मानव और प्रकृति के बीच संतुलन भी बनाता है । साथ ही आध्यात्मिकता का मार्गदर्शन भी करता है ।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 2014 में, 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का सुझाव संयुक्त राष्ट्र सभा में दिया गया। तब से अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच योग के प्रति स्वीकारोक्ति बढ़ती देखी जा रही है। इस प्रकार हमारी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत योग, संपूर्ण विश्व को "वसुधैव कुटुंबकम" के रूप में चरितार्थ करने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है ।

बापू का एक ही सपना
स्वच्छ एवं सुन्दर हो भारत अपना

तुषार जैन
सहायक निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं
विश्लेषण प्रकोष्ठ (क क्षेत्र)

हमारे भारतीय संस्कारों में सदियों से एक मान्यता है कि जहां साफ सफाई होती है वहीं पर लक्ष्मी का वास होता है । स्वच्छता एक क्रिया है जिससे हमारा शरीर, दिमाग, कपड़े, घर, आसपास और कार्यक्षेत्र साफ और शुद्ध रहते हैं । हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए साफ–सफाई बहुत जरुरी है । अपने आसपास के क्षेत्रों और पर्यावरण की सफाई सामाजिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरुरी है । हमें साफ–सफाई को अपनी आदत में लाना चाहिए और गंदगी को हमेशा के लिए हर जगह से हटा देना चाहिए क्योंकि गंदगी वह जड़ है जो कई बीमारियों को जन्म देती है । जो रोज नहीं नहाता, गंदे कपड़े पहनता हो, अपने घर या आसपास के वातावरण को गंदा रखता है तो वह हमेशा बीमार रहता है । गंदगी से आसपास के क्षेत्रों में कई तरह के कीटाणु, वाइरस इत्यादि पैदा होते हैं जो बीमारियों को जन्म देते हैं । एक बार महात्मा गांधी जी ने कहा था कि दृ "भगवान के बाद में स्वच्छता को ही महत्व दिया जाता है"

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए, भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए गांधी जयंती के दिन 2 अक्टूबर 2014 को "स्वच्छ भारत अभियान" की शुरुआत की थी ताकि प्रत्येक व्यक्ति साफ–सफाई के महत्व को

समझ सके और इसके प्रति जागरुक हो सके और अपने आसपास फैली गंदगी को दूर करने में सहायता कर सके।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत ज्यादा से ज्यादा शौचालयों का निर्माण करवाया गया ताकि खुले में शौच मुक्त भारत बन सके और पर्यावरण पूरी तरह शुद्ध और स्वच्छ हो सके । इसके साथ ही स्वच्छ भारत अभियान के तहत ग्रामीण इलाकों में लोगों के रहन–सहन के स्तर को सुधारने और सफाई के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से भी बड़े स्तर पर स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

देश में पर्यटन को बढावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना बहुत ही महत्वपूर्ण है । अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यही समय एवं अवसर है । यदि हम अपने आसपास के वातावरण को साफ रखेंगे तो यह राष्ट्र निर्माण के कार्य में भी मदद करेगा जिससे अधिक से अधिक विदेशी पर्यटकों को हमारे देश की यात्रा करने और उसकी सुन्दरता, प्रकृति और विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा ।

घर या अपने आसपास में संक्रमण फैलने से बचाने और गंदगी के पूर्ण निपटान के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि गंदगी को केवल कूड़ेदान में ही डालें । साफ–सफाई केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि ये हर समाज, समुदाय और देश के हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हमें इसके महतव को समझना चाहिए तथा मोदी सरकार के इस स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने के लिए कदम उठाने चाहिए । हम सभी समान रुप से सहयोग करेंगे तभी हमारा राष्ट्र पूरी तरह स्वच्छ तथा स्वस्थ राष्ट्र कहलाएगा ।

"बापू का एक ही सपना स्वच्छ एवं सुंदर हो भारत अपना"

सुकून की तलाश में

रविंद्र कुमार
संयुक्त निदेशक – पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

वर्तमान समय में ज्यादातर लोग एक ऐसी दौड़ का हिस्सा बने हुए हैं जिसमें कभी ना खत्म होने वाली उन्नति रुपी जाल में सब लोग इधर –उधर भाग रहे हैं और उसको जीतने के चक्कर में ना जाने कितने महत्वपूर्ण एवं खुशी भरे पलों को पीछे छोड़ आगे बढ़ने की बेचौनी ने सुकून को उनके जीवन से बहुत दूर कर दिया ।

हर सुबह रोजाना की तरह ऑफिस का बैग लेकर कुछ लोग अपनी कार से तो कुछ लोग मैट्रो से या फिर कुछ लोग मोटरसाइकिल या बस इत्यादि से जल्दबाजी में निकलते हैं । कुछ तो बिना नाश्ते के और कुछ लोग रास्ते में ट्रैफिक के दौरान खाते–पीते देखे जा सकते हैं इस भागा – दौड़ी में ऑफिस के कामकाज में उलझते –सुलझते दिन कब निकल जाता है पता ही नहीं चलता। फिर ऑफिस से घर के बीच का सफर गाड़ियों के शोरगुल और ट्रैफिक ने तो मानो उनके घर जाने के सुकून को ही नष्ट ही कर दिया है।

ऐसी ही वातावरण में दिन– महीने और साल बीत जाने के बाद सुकून की तलाश में एक दिन वह शहर के शोरगुल से दूर पहाड़ों, नदियों, झरनों एवं हरे–भरे जंगलों की ओर भागता है । इससे उसके मन को इतना सुकून मिलता है कि इन्ही पहाड़ों झरनों की कलकल, पक्षियों की चहचहाहट, नीले गगन और मनमोहक हरियाली के बीच रह जाए । वहां की हर सुबह शुद्ध वातावरण में ऊर्जा से भरपूर सूर्य की किरणों की चमक ने उसके मन को एक अलग ही सुकून देती है जिसे वह अपने निज निवास में खोजता रहता है । भ्रमण के दौरान अपने परिवेश से दूर पहाड़ों में मैगी के साथ चाय की चुस्की ने तो मानो उसका मन ही जीत लिया हो फिर इन्हीं सबके बीच उसकी छुट्टियाँ समाप्त होने को आ जाती हैं। फिर वहां से लौटने के बाद फिर वही ऑफिस से घर और घर से ऑफिस के सिलसिले में रिटायरमेंट कब आ जाती है पता ही नहीं चलता । यह सब बीत जाने के बाद जब उसको समझ में आता है कि काश मैं इस मोह –माया से परे होकर अपने आप को जान पाता तो कुछ और ही होता ।

''कुछ तो खाली रह गया था तुम्हारे खुद के होने में,
तुम्हें खुद से ही मिलाने वाला कोई और ही है।''

फिर वही व्यक्ति सभी को यही संदेश देता है कि जिंदगी को जिंदादिली से जियो लगे कि हर दिन को जी भर के जिया हो हम सभी के अंदर सुकून है बस उसको तलाशना हमें ही है।

इतिहास में भारतीय महिलाएं

शिव पार्वती
सहायक निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

महिलाओं को कई भूमिकाओं को सहजता से निभाने के लिए जाना जाता है और इस प्रकार, उन्हें हर समाज की रीढ़ माना जाता है। पुरुष प्रधान समाजों में रहते हुए, महिलाएं कई तरह की भूमिकाएं निभाती हैं, जैसे देखभाल करने वाली मां, प्यारी बेटियां, सक्षम सहकर्मी और यहां तक कि शक्तिशाली नेता भी। सबसे अच्छी बात यह है कि वे हर भूमिका में बिल्कुल फिट बैठते हैं।

प्राचीन भारतीय इतिहास में ऐसी ही एक महिला रानी रुद्रमा देवी हैं जिन्होंने काकतीय राजवंश पर शासन किया था जो दक्षिण भारत का हिस्सा था।

रुद्रमा देवीः रानी जिसने एक राजा की छवि धारण की

रुद्रमा देवी ने उस पद को बनाए रखा जो उन्हें दिया गया था और एक राजा के रूप में शासन किया था। उसने पुरुष पोशाक पहनी थी और एक समान आचरण बनाए रखा था। शायद ही हमने महिलाओं के वर्चस्व वाले क्षेत्र को देखा हो। इन दुर्लभ महिलाओं में काकतीय वंश की 13वीं शताब्दी की योद्धा रानी रुद्रमा देवी हैं। रुद्रमा देवी का जन्म रुद्रम्बा के रूप में राजा गणपतिदेव के यहाँ हुआ था। वह राजा गणपतिदेव की इकलौती संतान थीं, जो काकतीय वंश की शासक थीं। उन्होंने राजवंश की राजधानी वारंगल से पूरे क्षेत्र पर शासन किया।

काकतीय राजवंश उन प्रमुख राजवंशों में से एक था जिन्होंने तेलंगाना पर शासन किया और इसके इतिहास और सभ्यता को आकार देने में प्रमुख योगदान दिया। गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच स्थित एक पहाड़ी हनुमानकोंडा ने काकतीय साम्राज्य की नींव रखी। वारंगल, जिसे तब ओरुगल्लु कहा जाता था, ने राजवंश की राजधानी बनाई जिसने लगभग 1150 ईस्वी से 1323 ईस्वी तक तेलुगु देश पर शासन किया।

रुद्र देवः रुद्रमा देवी राजा के रूप में

चूंकि गणपतिदेव के कोई पुत्र नहीं था, उन्होंने पुत्रिका समारोह किया और औपचारिक रूप से रुद्रमा देवी को पुत्र के रूप में नामित किया। उनकी पुरुष पहचान के लिए,

उनका नाम रुद्रदेव रखा गया। गणपतिदेव ने रुद्रमादेवी को अपना श्पुरुष उत्तराधिकारीश नामित किया।

वह अपनी शुरुआती किशोरावस्था में सत्ता में आईं जब उन्हें सह–रीजेंट नियुक्त किया गया और अपने पिता के साथ शासन किया। उसने उस पद को बनाए रखा जो उसे दिया गया था और एक राजा के रूप में शासन किया। उसने पुरुष पोशाक पहनी थी और एक समान आचरण बनाए रखा था। बाद में उनकी शादी निडदावोलु के राजकुमार वीरभद्र से हुई, जिनसे उनकी दो बेटियां थीं।

रानी : रुद्रमा देवी

पांड्या आक्रमण के बाद प्रतिष्ठा की हानि के बाद, उसके पिता सार्वजनिक क्षेत्र से रुद्रमा को नियंत्रण सौंपते हुए सेवानिवृत्त हुए। अब शक्तियाँ रानी रुद्रमा देवी के हाथों में निहित थीं। शास्त्रों से पता चलता है, उसने व्यक्तिगत रूप से 1261 से शासन करना शुरू कर दिया था।

1266 के आसपास उसने अपने पिता और पति दोनों को खो दिया। अपने पिता की मृत्यु के बाद, रुद्रमा को अंततः 1269 में राज्याभिषेक किया गया था। वह अब आधिकारिक तौर पर साम्राज्य की रानी थी। हालाँकि, उसके लिंग के कारण, उसके सौतेले भाइयों सहित कई विरोध उसके रास्ते में आ गए। हरिहर देव और मुरारी देव जिन्होंने एक महिला के अधिकार को प्रस्तुत करने से इनकार कर दिया, बाद में उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया।

ऐसा माना जाता है कि उन्होंने आम लोगों का विश्वास हासिल करने और नए वफादारों को जीतने के लिए ऐसी नीति को आगे बढ़ाया।

एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में उसने रेनाडु, एरुवा मुलिकिनाडु और सत्ती जैसे महत्वपूर्ण किलों पर कब्जा कर लिया।

उनकी उपलब्धियों में उनके पिता द्वारा शुरू किए गए वारंगल किले का पूरा होना शामिल है। इसमें एक दूसरी दीवार और संरचना के लिए एक खाई को शामिल करना शामिल था जिसे भविष्य की घेराबंदी के खिलाफ शहर की रक्षा के लिए बनाया गया था।

उल्लेखनीय है कि उन्होंने वर्षा जल संचयन, जल भंडारण प्रणालियों की शुरुआत की और आधुनिक खेती प्रणाली/भविष्य के लिए भोजन के भंडारण आदि का आविष्कार किया। उन्होंने अपने नागरिकों के लिए कई कल्याणकारी योजनाओं की शुरुआत की।

इतिहास के माध्यम से, लिंग बार–बार एक 'बाधा' और दमन का एक उपकरण साबित हुआ है। 13वीं शताब्दी में ऐसी महान भारतीय रानी का उदय हुआ, जिन्हें स्त्री होने के कारण पीड़ित किया गया ।

उच्च साक्षरता दर और समान कार्य के लिए समान वेतन वाले किसी भी समाज के लिए महिला सशक्तिकरण चाहे अतीत हो, वर्तमान हो या भविष्य, महिला सशक्तिकरण आर्थिक रूप से संपन्न होने और गरीबी से बाहर निकलने में सक्षम है। महिलाओं और लड़कियों को हिंसा और दुर्व्यवहार से बचाना जबकि अपराधों की रिपोर्टिंग के खिलाफ कलंक को चुनौती देना समग्र रूप से एक अधिक सुरक्षित समाज का निर्माण करेगा। सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त बनाना किसी भी देश के लिए समय की आवश्यकता है।

आधुनिक भारतीय इतिहास उन अग्रदूतों से भरा है जिन्होंने लैंगिक बाधाओं को तोड़ दिया है और अपने अधिकारों के लिए कड़ी मेहनत की है और राजनीति, कला, विज्ञान, कानून आदि के क्षेत्र में प्रगति की है। कुछ उदाहरण हैं: मदर टेरेसा (नोबेल जीतने वाली पहली भारतीय महिला, शांति पुरस्कार), इंदिरा गांधी (भारत की पहली महिला प्रधान मंत्री), प्रतिभा पाटिल (भारत की पहली महिला राष्ट्रपति), कल्पना चावला (अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला), किरण बेदी (भारत की पहली महिला आईपीएस अधिकारी), न्यायमूर्ति एम. फातिमा बीवी (पहली महिला न्यायाधीश जिन्हें भारत के सर्वोच्च न्यायालय में नियुक्त किया गया था), प्रिया झिंगन (1993 में भारतीय सेना में शामिल होने वाली पहली भारतीय महिला) हरिता कौर देओल (भारतीय में एकल उड़ान भरने वाली पहली महिला पायलट, वायु सेना, 1994 में) और कई अन्य कई क्षेत्रों में।

आइए, आशा करते हैं कि भारत में महिला सशक्तिकरण और प्रगति की दिशा में निरंतरता बनी रहेगी!

स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत

रंजीत सिंह
संयुक्त निदेशक–आईटी पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

स्वच्छ भारत अभियान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा रखा गया था और यह अभियान महात्मा गांधी जी के 145 वीं जयंती पर 2014 में रखा गया। इस योजना में गांधी जी द्वारा दिए गए उपदेश और मार्ग पर बहुत से लोगों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस योजना को चलाए रखने का एक और कारण यह था कि गांधीजी का सपना था की भारत देश विदेशी रूप से स्वच्छ और निर्मल हो जाए। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री जी ने गाँधी जी के जन्मदिन पर इस अभियान को दिल्ली के राजघाट में सफाई करके शुरू किया।

हमारे देश में गंदगी का प्रमुख कारण लोगों की लापरवाही और उनमें जागरूकता की कमी थी। लोगों को स्वच्छता के बारे में जानकारी नहीं थी जिसके कारण देश धीरे–धीरे गंदा होता गया और बीमारियां फैलती गई इसके अलावा और भी बहुत से कारण है।

- देश में शिक्षा का अभाव एक सबसे बड़ी समस्या है, जिसके कारण बहुत से परेशानियों का सामना देश को करना पड़ा।
- देश की गंदगी का सबसे बड़ा कारण लोगों की मानसिकता है, क्योंकि लोगों की मानसिकता में कमी के कारण देश धीरे–धीरे गंदा होता गया और बीमारी फैलती गई।

- जनसंख्या वृद्धि भी एक महत्वपूर्ण कारण है, क्योंकि जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ते जा रही हैं, वैसे वैसे लोगों द्वारा गंदगी भी अधिक फैलाई जा रही है।
- देश में सार्वजनिक शौचालय की कमी के कारण लोग जब बाहर जाते हैं, तो उन्हें शौच करने की व्यवस्था नहीं मिल पाती और वे खुले में शौच के लिए चले जाते हैं और इससे भी देश गंदा होता गया।
- बड़ी–बड़ी फैक्टरी द्वारा गंदे अवशेषों को नदियों में छोड़ दिया गया, जिसके कारण नदियां प्रदूषित होती गयी और इस कारण देश गंदा होता गया।
- देश के दूसरे इलाकों में कचरा पात्र नहीं होने के कारण गंदगी सड़कों पर फैली रहती है।

देश को स्वच्छ बनाने के उपाय

- भारत को एक हरा भरा और स्वच्छता से भरपूर देश बनाया जा सकता है। इसकी शुरुआत लोगों द्वारा ही की जा सकती है, यदि लोग जागरूक होंगे तो हमारा देश स्वच्छ भारत देश बन जाएगा।
- देश को स्वच्छ बनाने के लिए देश के हर घर में शौचालय बनवाने जरूरी है।
- देश के अंदर गांव शहर मे सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण करवाना जरूरी है।
- देश में लोगों को साफ सफाई और स्वच्छता के बारे में जागरूक होना जरूरी है, इसके लिए लोगों में जागरूकता फैलाना जरूरी है।
- जगह जगह कचरा पात्रों का रखना जरूरी है।
- देश में शिक्षा को बढ़ावा देना जरूरी है, जिससे लोग समझ सके कि देश में स्वच्छता कितनी जरूरी है।
- देश में लोगों को गंदगी के कारण होने वाले नुकसान और उनके परिणामों को बताना जरूरी है, ताकि लोग समझ सके कि इससे देश को कितना नुकसान हो रहा है।
- देश की जनसंख्या को कम करना जरूरी है।

भारत का स्वच्छ रहना देश के लिए भी अच्छा है और लोगों के लिए भी अच्छा है। भारत देश हरियाली और स्वच्छता से भरा रहा तो आने वाली पीढ़ी के लिए एक संदेश बन जाएगा।

आइए जानते हैं क्या है टेलीकॉम टेक्नोलॉजी में 5 G

तारकेश्वर दास
अतिरिक्त निदेशक–आपूर्ति पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

रेडियो तरंगों का उपयोग 120 वर्षों से वायरलेस संचार के लिए किया जाता है और हम उनका उपयोग रेडियो और टीवी प्रसारण, मोबाइल नेटवर्क में संचार के लिए और वाईफाई के लिए करते हैं। रेडियो तरंगें, प्रकाश की तरह, एक प्रकार की विद्युत चुम्बकीय तरंगें हैं। रेडियो तरंगों में प्रकाश की तुलना में बहुत कम आवृत्तियाँ होती हैं, जिसका अर्थ है कि वे कोनों के चारों ओर यात्रा करती हैं और यहाँ तक कि इमारतों तक पहुँचती हैं – मोबाइल संचार के लिए एकदम सही।

फ्रीक्वेंसी बैंड के आधार पर रेडियो तरंगें कितनी जानकारी ले जा सकती हैं, इसकी एक सीमा है। यदि हम उस सीमा तक पहुँच जाते हैं, तो किसी को बेहतर गति प्राप्त करने के लिए, किसी और को कम करने की आवश्यकता होती है। 5G उपयोग करने के लिए अधिक क्षमता, अधिक ''स्थान'' जोड़ता है, जिसका अर्थ है कि सभी के लिए अधिक जगह है और उनके उपकरणों को उच्च डेटा गति मिलती है।

5G क्या है?

5G उन्हीं रेडियो फ्रीक्वेंसी पर चलता है जो वर्तमान में हमारे स्मार्टफोन, वाई–फाई नेटवर्क और उपग्रह संचार में उपयोग किए जा रहे हैं, लेकिन यह तकनीक को बहुत आगे तक ले जाने में सक्षम बनाता है। सेकंड में (भीड़ भरे स्टेडियम से भी) हमारे फोन पर एक फुल–लेंथ एचडी मूवी डाउनलोड करने में सक्षम होने के अलावा, 5G हर जगह

चीजों को जोड़ने के बारे में है – मजबूती से, बिना अंतराल के – ताकि लोग वास्तविक समय में चीजों को माप, समझ और प्रबंधित कर सकें।

मोबाइल प्रौद्योगिकी की पहली पीढ़ी के बाद से चीजें बहुत बदल गई हैं। 1G युग को ब्रीफकेस के आकार के फोन और अपेक्षाकृत कम संख्या में पेशेवर लोगों के बीच छोटी बातचीत द्वारा परिभाषित किया गया था। 2G तक की बढ़त में, मोबाइल सेवाओं की मांग बढ़ी और कभी कम नहीं हुई। फोन जो हमारी जेब में फिट हो सकते थे, एसएमएस और मोबाइल इंटरनेट एक्सेस 3G दुनिया की पहचान थे। 4G की बदौलत हमारे पास स्मार्टफोन, ऐप स्टोर और यूट्यूब हैं।

अब, 5G कनेक्टिव व्हीकल्स, ऑगमेंटेड रियलिटी और एन्हांस्ड वीडियो और गेमिंग जैसे नए उपयोग के मामलों को सक्षम करके हमारे पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन दोनों को पूरी तरह से नया रूप दे रहा है।

5G क्यों?

5G सेलुलर नेटवर्क की पांचवीं पीढ़ी है, जो 4G नेटवर्क की तुलना में 100 गुना तेज है। 5G लोगों और व्यवसायों के लिए पहले कभी न देखे गए अवसर पैदा कर रहा है। 5G तेज कनेक्टिविटी गति, अल्ट्रा–लो लेटेंसी (विलंब) और अधिक बैंडविड्थ सक्षम करेगा जो समाजों को आगे बढ़ा रहा है, उद्योगों को बदल रहा है, और दिन–प्रतिदिन के अनुभवों को नाटकीय रूप से बढ़ा रहा है। ई–स्वास्थ्य, कनेक्टेड वाहन और ट्रैफिक सिस्टम और उन्नत मोबाइल क्लाउड गेमिंग जैसी सेवाओं को हम भविष्य के रूप में देखते थे, जहां 5G तकनीक गेम को बदल सकती है। 5G तकनीक के साथ, हम एक स्मार्ट, सुरक्षित और अधिक टिकाऊ भविष्य बनाने में मदद कर सकते हैं। 5G नई क्षमताएं लाता है जो लोगों, व्यवसायों और समाज के लिए अवसर पैदा करता है। लेकिन हमारे लिए 5G का क्या मतलब होने वाला है? सीधे शब्दों में कहेंरू बहुत कुछ।

5G बनाम 4G । क्या अंतर है? मोबाइल नेटवर्क कैसे काम करता है? हमारा स्मार्टफोन 5G बनाम 4G पर कैसे काम करता है? डेटा ट्रैफिक हर साल बढ़ता है क्योंकि लोग अधिक वीडियो स्ट्रीम करते हैं और अधिक कनेक्टेड सेवाओं का उपयोग करते हैं। 5G को सोशल मीडिया, वीडियो स्ट्रीमिंग और अन्य चीजों के लिए अधिक क्षमता प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया था जो हम पहले से ही आज तक कर रहे हैं, लेकिन नए अभिनव उपयोग के मामलों के लिए भी जैसे एम्बुलेंस से अस्पताल तक उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो को सुरक्षित रूप से स्ट्रीमिंग करना और नए प्रकार की एक श्रृंखला को सक्षम करना, स्मार्ट उपकरणों और उद्योग डिजिटलीकरण की माध्यम से।

स्मार्टफोन के पीछे असली स्मार्टनेस मोबाइल नेटवर्क है जो हमें तेज गति से यात्रा करने पर भी कनेक्टेड रखता है। प्रौद्योगिकी पीढ़ी की परवाह किए बिना सभी मोबाइल नेटवर्क, समान बुनियादी सिद्धांतों का उपयोग कर रहे हैं कि वे कैसे काम करते हैं।

5G मोबाइल टेक्नोलॉजी किसने बनाई?

5G तकनीक को दुनिया भर में कई अलग–अलग कंपनियों और संगठनों के सहयोग से विकसित किया गया था, इसका मानकीकरण 3G संगठन के माध्यम से किया जाता है । 5G एक वैश्विक और खुला मानक है जिसका अर्थ है कि कोई भी यह पढ़ सकता है कि यह कैसे काम करता है और क्या आवश्यकताएं हैं। वैश्विक 5G मानकीकरण यह सुनिश्चित करता है कि डिवाइस और नेटवर्क एक साथ काम करेंगे, भले ही हम दुनिया में कहीं भी हों और हम किस विशिष्ट डिवाइस का उपयोग कर रहे हों।

5G संदर्व में भारत पीछे नहीं है। 1 अगस्त 2022 को 5G स्पेक्ट्रम बोली प्रक्रिया पूरी होने के बाद से, दूरसंचार उद्योग इस बात पर प्रतिस्पर्धा कर रहा है कि भारत में पहले 5G कौन लॉन्च करेगा। संभावना यह है कि 5G को पहले चरण में 13 भारतीय शहरों में रोल आउट किया जाएगा जिसमें दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु, चंडीगढ़, गुरुग्राम, हैदराबाद, लखनऊ, पुणे, गांधीनगर, अहमदाबाद और जामनगर शामिल हैं, इसके बाद एक राष्ट्रव्यापी रोलआउट होगा।

गुरुत्वाकर्षण- एक चमत्कार और हमारे ग्रह की जीवन रेखा

संजय वर्गीस
निदेशक–वित्त पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

हम सभी चमत्कारों को देखने की अपेक्षा करते हैं, फिर भी हम शायद ही कभी सबसे बड़े चमत्कारों में से एक बड़े चमत्कार को नोटिस करते हैं जो लगातार प्रत्येक दिन, हर दिन होता है। यह चमत्कार है सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के साथ पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव।

भौतिक रूप से दुनिया के आंतरिक भाग को एक साथ रखने वाला बल पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव है, जिसे आमतौर पर गुरुत्वाकर्षण के रूप में जाना जाता है। पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण उसके पूरे पिंड से आता है।

हमने अध्ययन किया है कि चीजें अंतरिक्ष में तैरती हैं, अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष जहाजों में तैरते हैं – क्योंकि अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण का लगभग अभाव है। हालांकि अंतरिक्ष में तैरने के विचार एक तरह का अच्छा एहसास देते हैं, फिर भी पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण की अनुपस्थिति हमारे ग्रह के लिए विनाशकारी हो सकती है।

गुरुत्वाकर्षण एक कारण है कि सब कुछ जमीन पर गिर जाता है जैसे कि किसी चुंबक द्वारा खींचा जाता है। हमें इसे दूर करने के लिए अधिक ताकत की आवश्यकता होती है, विमानों में गुरुत्वाकर्षण को घटाने के लिए जेट इंजन होते हैं और रॉकेट का शक्तिशाली बल उन्हें अंतरिक्ष में जाने में सहायता करता है।

आइए एक पल के लिए कल्पना करें कि कुछ क्षणों के लिए गुरुत्वाकर्षण खो जाए दृ तो क्या होता है? सभी चीजें बहने लगेंगी, हवा, वातावरण अंतरिक्ष में रिसने लगेगा। ब्रह्मांड के अनंत विस्तार में महासागर बहने लगेंगे। हमारी सभी

भौतिक चीजें धीरे–धीरे अंतरिक्ष में समा जाएंगी। पृथ्वी ऑक्सीजन से रहित हो जायेगी और अन्य किसी भी हवा से रहित। मानव जाति का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। फिर भी पृथ्वी की सतह से गहराई से जुड़ी चीजें जैसे इमारतें आदि जीवित रह सकती हैं, मनुष्यों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसके अलावा सराहना की जाने वाली बात यह है कि गुरुत्वाकर्षण बल एकदम सटीक होना चाहिए "ना थोड़ा अधिक और ना ही थोड़ा कम"। यदि यह बहुत अधिक होगा तो हम चलने या चम्मच लेने में भी सक्षम नहीं होंगे और यदि यह बहुत कम होगा तो हमारा वातावरण अंतरिक्ष में रिस जाएगा ।

क्या यह चमत्कार नहीं है? क्या हमने अपने व्यस्त जीवन में कभी रुक कर इस बात पर विचार किया है – क्या यह जारी रहेगा या किसी समय गुरुत्वाकर्षण खिंचाव कम हो जाएगा।

मैंने ''सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के साथ मिलकर'' शब्दों का इस्तेमाल किया है। फिर हमें प्रकाश, ऊष्मा और ऊर्जा प्रदान करने के अलावा सूर्य की क्या भूमिका है? यह हमें लगातार इष्टतम दूरी पर बनाए रखने के लिए गुरुत्वाकर्षण खिंचाव की सटीक मात्रा लगाता है। "ना थोड़ा अधिक और ना ही थोड़ा कम"। खिंचाव में थोड़ी–सी भी वृद्धि हुई और हम जलने लगेंगे, महासागर वाष्पीकृत हो जाएंगे, सभी इमारतें पिघल जाएंगी, मनुष्य का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। थोड़ा कम खिंचाव होने पर, हम हिमयुग में वापस चले जाएंगे। महासागर जम जाएंगे, मनुष्य और पौधे मर जाएंगे।

इसलिए, सूर्य 24/7 हर समय सही मात्रा में खिंचाव बनाए रखता है। यह सौर मंडल के सभी पिंडों को अपनी–अपनी कक्षाओं को बनाए रखने में मदद करता है जिससे ऐसा न हो कि वे आपस में टकराएं। इस खिंचाव के बिना पृथ्वी अनंत ब्रह्मांड के विशाल कक्ष में गिर सकती है। क्या यह पृथ्वी ब्रह्मांड में गिरेगी या ब्रह्मांड के ऊपर गिरेगी? हमें पता नहीं। ब्रह्मांड में कोई भी ऊपर या नीचे नहीं है, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आपको कहां रखा गया है। यदि आप उत्तरी ध्रुव पर हैं तो आप कहते हैं कि तारे ऊपर हैं और अगर दक्षिणी ध्रुव पर तब भी आप वही बात कहेंगे। तो हम कहाँ हैं, ऊपर या नीचे?

सूर्य के गुरुत्वाकर्षण खिंचाव का एक और सबसे बड़ा महत्व है, एक और चमत्कार जिसे हम अपने दैनिक जीवन में अनदेखा कर देते हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सौरमंडल में सूर्य कई ग्रहों को एक साथ रखता है और पूरे ब्रह्मांड में ऐसे लाखों सौर मंडल हैं।

अब क्या हमारा सौरमंडल हर समय एक ही स्थान पर रहता है? नहीं, वास्तव में ब्रह्मांड हर समय विस्तार कर रहा है और अरबों वर्षों से इसका विस्तार हो रहा है। वास्तव में, हम ब्रह्मांड के केंद्र से 74 किमी/सेकंड की गति से दूर जा रहे हैं। कल्पना कीजिए कि हम हर दिन 64 लाख किमी बह रहे हैं और हम अरबों वर्षों से इसी तरह आगे बढ़ रहे हैं। ब्रह्मांड का अंत नहीं है, यह अनंत है।

यह एक चमत्कार है, फिर भी इसके अंदर इससे भी बड़ा चमत्कार है।

जबकि ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है फिर भी हमारी आकाशगंगा जैसी सभी लाखों आकाशगंगाएं एक साथ मिलकर चलती हैं और उनके ग्रह अपने–अपने सूर्य के साथ अपने कक्षीय अनुशासन को बनाए रखते हुए घूमते हैं। और ये सभी संभव होता है सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल से, जो ग्रहों को अलग नहीं होने देता भले ही वे सभी 2.66 लाख किमी प्रति घंटे की खगोलीय गति से ब्रह्मांड के केंद्र से दूर जा रहे हों।

पृथ्वी पर जीवन सूर्य और पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के संयोजन पर टिका है। यह इतना आसान चमत्कार है! फिर भी यह मानव जाति को इतनी गहराई से प्रभावित करता है।

किताबे पढ़ने की आदत

रुनीता गोस्वामी
अपर निदेशक – पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

परिवर्तन ही स्थिर है (Change is the only constant)। पिछले कुछ दशकों में परिवर्तन इतनी तेजी से हुआ है कि इसने लगभग उन सभी चीजों को गायब कर दिया है जिनके साथ हम बड़े हुए हैं और जिन्हें हम भूल रहे हैं।

इनमें से एक है किताबें पढ़ने की आदत । सब कुछ भौतिक से यथार्थ की ओर बढ़ रहा है, इसलिए नई पीढ़ी की पढ़ने की आदतें भी बदल गयी हैं। मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि इस तेजी से भागती दुनिया में भाषा और साहित्य कैसे बचेगा। निस्संदेह, इन तकनीकी विकासों के लाभों ने सभी लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद की है और कई बार सेवाओं के वितरण की दक्षता में वृद्धि की है।

किताबें पढ़ना एक ऐसी गतिविधि है जो मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास का पर्याय रही है। किताब के पन्ने पलटने का साधारण सुख और छपे हुए पन्नों की महक – चाहे वह पुरानी किताब हो या ताजा छपी हुई – का वर्णन नहीं किया जा सकता है, इसे अनुभव करना होगा ।

पढ़ना किसी की कल्पना को विकसित करने में मदद करता है और भाषा के प्रति प्रेम गहराता है जैसे–जैसे हम अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ते हैं, शब्दों की शब्दावली समृद्ध होती जाती है।

हम आज की पीढ़ी को हर समय अपने मोबाइल स्क्रीन से चिपके हुए देखते हैं। मोबाइल इंसानों के ध्यान की अवधि को कम करने के लिए जिम्मेदार कारणों में से एक है। हमें तत्काल संतुष्टि की आदत हो गई है। बेशक, आसानी से और सार्वभौमिक रूप से उपलब्ध जानकारी का लाभ अमूल्य है, लेकिन जानकारी ज्ञान नहीं है। इंटरनेट एक महासागर की तरह है जहाँ सब कुछ उपलब्ध है, समुद्र का मंथन करना और सही जानकारी प्राप्त करना आज एक चुनौती बन गया है! फेक न्यूज की भरमार है, किस पर विश्वास करें और किस पर नहीं!

मेरा मानना है कि यहीं से किताबें पढ़ने का महत्व आता है। पढ़ना हमारी कल्पना शक्ति को बढ़ाने के अलावा, अपने विश्लेषण कौशल को आत्मसात करने, सोचने और सुधारने का मौका देता है। बच्चों के स्क्रीन समय को कम करने पर अब बढ़ते हुए ध्यान के साथ, उन्हें किताबों से रूबरू कराएं – रचनात्मक, रंगीन किताबें जो उनके सामाजिक कौशल में भी सुधार करेंगी।

चुनौती बहुत बड़ी है, क्योंकि न केवल छोटे बच्चे, बल्कि उनकी पुरानी पीढ़ी भी सोशल मीडिया में डूबी हुई है! उपकरणों की उपलब्धता में व्यापक तकनीकी प्रगति हुई है जो अब हमें अपनी मातृभाषा में इंटरनेट पर लेनदेन करने में सक्षम बनाती है।

किताबें पढ़कर बड़ी हुई पीढ़ी की ओर से बोलते हुए, मैं किताबों को पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के पक्ष में हूं क्योंकि पढ़ने के साथ ही लिखने का रुझान आएगा और तभी दुनिया भर की मातृभाषाएं जीवित रहेंगी।

भारत के विकास में विज्ञान

पवन सैन
सहायक निदेशक (वित्त)–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

मनुष्य का विकास कई शताब्दियों से हुआ है। उन्होंने अपनी जीवन शैली को विकसित किया है और यह सब वैज्ञानिक आविष्कारों की मदद से ही संभव है। यह सब आग की खोज से लेकर पहिए, बैलगाड़ी और पत्थर के औजारों के आविष्कार के साथ शुरू हुआ और फिर किसी भी प्रकार की रूकावट नहीं देखी गई। मनुष्य विज्ञान की मदद से नई चीजों की खोज कर रहा है और तब से मनुष्य ने अपनी जीवनशैली में काफी वृद्धि की है।

अर्थव्यवस्था निर्माण में विज्ञान की भूमिका

इंडस्ट्रीज का उदय

वे दिन चले गए जब भारत में लोग मुख्य रूप से कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प व्यवसायों तक ही सीमित थे। विज्ञान में वृद्धि के साथ कई नए व्यवसायों का गठन हुआ है। कई उद्योगों ने नए युग के वैज्ञानिक उपकरणों और मशीनरी के कारण तेजी देखी है। इस प्रकार देश में औद्योगिक क्षेत्र के विकास में विज्ञान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

रोजगार के अवसरों में वृद्धि

देश में अधिक से अधिक उद्योगों और व्यवसायों की स्थापना ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है। कई कुशल पेशेवरों को इन व्यवसायों में विभिन्न पदों पर काम करने का मौका मिलता है। कई लोगों को नौकरी के लिए विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। वे व्यवसायों के विकास में सहायता करते हैं जो बदले में देश के समग्र आर्थिक विकास में सहायता करता है।

बेहतर निर्यात बाजार

नए वैज्ञानिक सूत्रों और तकनीकों ने भारत में कृषि और साथ ही साथ औद्योगिक क्षेत्र का लाभ उठाया है। बेहतर उत्पादन ने विभिन्न खाद्य वस्तुओं के निर्यात को जन्म दिया है। इसी प्रकार उन्नत उपकरणों के उपयोग से विभिन्न

वस्तुओं के उत्पादन में मदद मिलती है जिन्हें अन्य देशों में निर्यात किया जाता है। इस प्रकार विज्ञान ने देश में निर्यात बाजार की स्थिति में सुधार लाने में मदद की है जिससे कई व्यवसायों के साथ–साथ देश की आर्थिक स्थिति को भी फायदा होगा।

बेहतर संचार

अगर कोई वैज्ञानिक आविष्कार है जिसका इस ग्रह पर हर कोई आभारी है तो वह है संचार का साधन। मोबाइल फोन, इंटरनेट और संचार के अन्य लागत प्रभावी माध्यमों के आविष्कार के साथ दूर–दूर के देशों में रहने वाले लोगों के साथ विचारों का आदान–प्रदान करना काफी आसान हो गया है। इससे दुनिया भर में इस्तेमाल किए जानी वाली सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू किया जा सकता है। अन्य देशों की तरह भारत को भी इस अविष्कार से लाभ पहुंचा है। संचार के माध्यम से हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी की दुनिया में नवीनतम तकनीकों के साथ अपडेट हो गए हैं और लगातार उन प्रथाओं को अपना रहे हैं जो देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद करती हैं।

विज्ञान ने भारत के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। वैज्ञानिक तरीकों और तकनीकों का उपयोग किए बिना हम अपने देश को उतना विकसित नहीं कर सकते थे जितना हमने आज किया है।

पेड़ ही है प्राण

लखन लाल गोहारे
अपर निदेशक (प्रशासन)–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

1. पेड़ पोधें हमारे पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।
2. वर्षा के लिए पेड़ पोधे ही सहायक होते हैं।
3. पेड़ मिट्टी को बांधकर रखते है।
4. हमें पेड़ों का सरंक्षण करना चहिए ओर उनके काटने से बचाना चाहिए।
5. पेड़ हमें ठंडी छाया प्रदान करते हैं।
6. पेड़ हमें खाने के लिए फल देते हैं।
7. पेड़ हमें जलाने के लिए लकड़ी देते हैं।
8. पेड़ ऑक्सिजन का निर्माण करने में भी सहायक होते हैं।
9. किताब बनने वाले कागज का निर्माण भी लकड़ी के उपयोग से ही किया जाता हैं।
10. हमें अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए और इस कार्यक्रम की बढ़ावा देना चाहिए।

मेरे दादा द्वारा सुनाई गई ''हाउस ऑफ गॉड'' पर एक लघु कथा

विजय कंसल
अपर निदेशक–पेटोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

एक दोपहर मैं बैंक में गया थे! वहाँ एक बुजुर्ग भी अपने काम से आये थे! वहाँ वह कुछ ढूंढ रहे थे! मुझे लगा शायद उन्हें पेन चाहिये! इसलिये उनसे पूछा तो वह बोले 'बीमारी के कारण मेरे हाथ कांप रहे हैं और मुझे पैसे निकालने की पर्ची भरनी है उसके लिये मैं देख रहा हूँ कि कोई मदद कर दे!'

मैं बोला ''आपको कोई हर्ज न हो तो मैं आपकी पर्ची भर देता हूँ!'' उन्होंने मुझे अनुमति दे दी! मैंने उनसे पूछकर पर्ची भर दी! रकम निकाल कर उन्होंने मुझसे पैसे गिनने को कहा! मैंने पैसे भी गिन दिये! हम दोनों एक साथ ही बैंक से बाहर आये तो वह बोले 'क्षमा करें तुम्हें थोडा कष्ट तो होगा परन्तु मुझे रिक्शा करवा दो, इस भरी दोपहरी में रिक्शा मिलना बड़ा कष्टकारी होता है!'

मैं बोला 'मुझे भी उसी तरफ जाना है, मैं तुम्हें कार से घर छोड देता हूँ!' वह खुशी खुशी तैयार हो गये। हम उनके घर पहूँचे! '60' x '100' के प्लाट पर बना हुआ घर जिसे शायद बंगला कह सकते हैं! घर में उनकी वृद्ध पत्नी थीं! वह थोडी डर गई कि इनको कुछ हो तो नहीं गया जिससे उन्हें छोडने एक अपरिचित व्यक्ति घर तक आया है! फिर उन्होंने पत्नी के चेहरे पर आये भावों को पढकर कहा कि ''चिंता की कोई बात नहीं यह मुझे छोडने आये हैं!''

फिर बातचीत में वह बोले, ''इस भगवान के घर में हम दोनों पति–पत्नी ही रहते हैं! हमारे बच्चे तो विदेश में रहते हैं।''

मैंने जब उन्हें "भगवान के घर" के बारे में पुछा तो उन्होंने बताया कि हमारे परिवार में भगवान का घर कहने की पुरानी परंपरा है! इसके पीछे की भावना हैं कि यह घर भगवान का है और हम उस घर में रहते हैं! जबकि लोग कहते हैं कि ''घर हमारा है और भगवान हमारे घर में रहते है!''

मैंने विचार किया कि दोनों कथनों में कितना अंतर है! तदुपरांत वह बोले... ''भगवान का घर'' बोला तो अपने से कोई ''नकारात्मक कार्य नहीं होते और हमेशा सदविचारों से ओत प्रेत रहते हैं।'' बाद में मजाकिया लहजे में बोले, ''लोग मृत्यु उपरान्त भगवान के घर जाते हैं परन्तु हम तो जीते जी ही भगवान के घर का आनंद ले रहे हैं!''

यह वाक्य ही जैसे भगवान का दिया कोई प्रसाद ही है! भगवान ने ही मुझे उनको घर छोडने की प्रेरणा दी! ''घर भगवान का और हम उनके घर में रहते हैं''

निस्वार्थ भाव की नैतिकता वाली यह लघुकथा मेरे हृदय में आज तक अंकित है और मुझे किसी के प्रति स्वार्थी न होने की प्रेरणा देती है!

माफी

सपना वर्मा
सहायक निदेशक – पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

2021 में अप्रैल–मई के महीने ने तो पूरे विश्व में कहर बरपा दिया था। घरों के अंदर बंद, बीमारी से ग्रस्त व त्रस्त दिल्ली शहर तो ऐसा लग रहा था कि शायद ही आने वाला समय कुछ छोड़ कर जाएगा। पंचामृत सोसाइटी के कई लोग अस्पताल में बेड तालाश रहे थे और कई लोगों ने तो अपने घरों में किसी आने वाली आपदा के भय से ही आक्सीजन सिलेंडर रख लिए थे।

ऐसी स्थिति को भांपते हुए सोसायटी के सेक्रेटरी चावला जी ने एक सिलेंडर सोसायटी की रिसेप्शन पर रख दिया था। पर अचानक वह सिंलिंडर कहीं गायब हो गया। व्हाट्स ऐप ग्रुप में हर कोई उसी सिंलिंडर की चर्चा कर रहा था मगर उसके बारे में किसी को नहीं पता चला तो इतनी पोस्ट पढ़ने और इंटरकाम पर शिकायत सुनकर चावला जी स्वयं नीचे गए और गार्ड भोलूराम से उसकी पूछताछ की तो वह बताने में असमर्थ रहा। चावला जी जब नीचे बेसमेंट में गए तो वहां सिंलिंडर एक कोने में पड़ा देखकर भोलूराम को डांटने लगे और उसे तुरंत निकल जाने की धमकी दे डाली। भोलू ने इसकी जानकारी के बारे में असमर्थता जताई तो उन्होंने उसे दो–चार थप्पड़ जड़ दिए। भोलू भी यह बताने में असमर्थ था कि वह सिलेंडर बेसमेंट तक कैसे पहुंचा क्योंकि वह तो कई बार लोगों के घर कोरियर का सामान और समाचार पत्र तक देने अकेला ही जा रहा था ऐसे में उसकी अनुपस्थिति का लाभ किसने उठाया उसे कुछ पता न था। सारी सोसायटी व्हाटस ऐप में भोलू को भला बुरा कहने में जुट गई। भोलू को नौकरी से निकालने की सार्वजनिक घोषणा की जा चुकी थी।

इसी बीच सोसायटी के एक सफाई कर्मचारी ने बताया कि स्वयं चावला जी ने यह सिंलिंडर नीचे उससे उठवाकर छिपाया था क्योंकि रात से उनकी पत्नी की तबीयत मामूली खराब थी। मास्क के कारण वो उसे पहचान नहीं पाएं। बात खुल न जाए इसलिए दोपहर होते होते पता चला कि चावला जी की पत्नी की हालत बुरी तरह से बिगड़ गई है और ऑक्सीजन की सख्त जरूरत है। लिफ्ट में कई मरीज जा चुके थे और उसके प्रयोग की मनाही थी। चावला जी आठवीं मंजिल पर रहते थे। उन्होने इंटरकॉम और व्हाट्स ऐप पर सबसे अनुरोध किया किंतु सभी को अपनी सुरक्षा प्यारी थी।

यह बात भोलू के कानों में भी पहुंची उसने आव देखा न ताव सिलेंडर कंधे पर लाद कर चावला जी के घर आठवीं मंजिल तक छोड़ आया और वहां पहुंचते पहूंचते उसका पसीने थकान और गर्मी से बुरा हाल था और वह उसी फ्लोर पर चित लेट गया । उधर चावला जी के घर में किसी को भोलू की सुध नहीं थी। बहरहाल श्रीमती चावला की हालत सुधरने लगी थी और भोलू भी थोड़ी देर में सामान्य स्थिति में आया और नीचे चला गया।

एक घंटे बाद चावला जी के बड़े सुपुत्र किसी विशेष काम से नीचे उतरे तो उन्होंने भोलू को सामने पाया तो देखते ही बोल पड़ा "अरे चिंता मत करो तुम्हें कोई नहीं निकाल रहा। हॉ, पापा से माफी मांग लेना।"

भोलू और आस–पास के सफाई कर्मचारी आवाक से रह गए और सोचने लगे कि माफी किसको किससे मांगनी चाहिए।

मेरी अमेरिका यात्रा डायरी

पूनम मित्तल
अपर निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

मुझे विभिन्न नई जगहों की यात्रा करने और क्षेत्रीय व्यंजनों को आजमाने का बहुत शौक है। जब मैं 1990 में एचपीसीएल में शामिल हुई, तो मुझे यह जानकर खुशी हुई कि एचपीसीएल के पूरे भारत में विभिन्न स्थानों पर गेस्ट हाउस हैं और परिवार वास्तविक पर एलएफए के लिए पात्र था। 1991 में शादी कर ली और मैं भाग्यशाली थी कि मुझे ऐसा पति मिला जो यात्रा करने के लिए समान रूप से उतावला है। हम भारत में साल में 2 ट्रिप करते थे। एक मध्यम वर्गीय परिवार के रूप में, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी अमेरिका जाकर उनकी मनमोहक जगहों का आनंद ले सकूंगी ।

किस्मत के मुताबिक मेरी बेटी ने भारत में बी.आर्क (Architecture) किया और फिर मास्टर्स डिग्री के लिए अमेरिका चली गई। उसके तीन साल के प्रवास के दौरान, मैंने अक्सर मिलने जाने का फैसला किया ताकि मैं उसके काम के साथ अपना अमेरिका घूमने का शौक पूरा कर सकूं।

जब हम अमेरिका के बारे में सोचते हैं, तो हमारे पास हमारी तैयार सूची होती है जैसे नियाग्रा फाल्स, ग्रैंडकैनियन, वाशिंगटन डीसी, न्यू यॉर्क, लॉस वेगास, इत्यादि । हालाँकि, मैं विशेष रूप से पर्यटकों के आकर्षण का उल्लेख नहीं करूँगी , लेकिन मैं यहाँ कुछ यात्रा अनुभव साझा कर रही हूँ, जिसने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। ये अनुभव जो पहले कभी किसी ने मेरे साथ साझा नहीं किए। छुट्टी का सबसे अच्छा हिस्सा इन आश्चर्यजनक अनुभवों से चकित हो रहा था, क्योंकि जैसा कि वे कहते हैं, 'स्वर्ग का अनुभव करने के लिए आपको मरना होगा'।

हम 2 बेडरूम वाले अपार्टमेंट में रुकते थे, जहां मेरी बेटी अपने कॉलेज की दोस्त के साथ शेयर के आधार पर रह रही थी। वह टेनेसी विश्वविद्यालय में पढ़ रही थी। टेनेसी से आपको जैक डेनियल की टेनेसी व्हिस्की की याद आ गई होगी।

हरे–भरे परिदृश्य के साथ सोसाइटी की इमारतें केवल 2 मंजिला थीं। हमें आश्चर्य हुआ कि यह कोई गेटेड सोसाइटी नहीं थी, कोई चोकीदार नहीं था, कोई चारदीवारी नहीं थी। अपार्टमेंट के ठीक सामने सडक पार एक मॉल था जो वास्तव में बहुत बड़ा था। तो हमारी शाम की सैर तय थी। सड़कों पर तेज रफ्तार कारों के साथ, हम सड़कों को पार करने से डरते थे, लेकिन जब हम सड़कों को पार कर रहे थे, तो हम चौंक गए, कि तेज गति वाली कार दूर रुक जाती थी. यह वास्तव में हमारी गलती थी क्योंकि हम सिग्नल पर सड़क पार नहीं करते थे। सड़क पार करने वाले लोगों को प्राथमिकता दी जाती है। प्रावधानों के साथ संकेत हैं जहां आप वॉक बटन दबा सकते हैं और सड़कों को पार करने के लिए कारों को रोक सकते हैं।

बसों में टिकट देने के लिए कोई कंडक्टर नहीं था। इसके बजाय ड्राइवर के पास एक सिस्टम लगाया गया था जहां यात्री टिकट के लिए क्रेडिट कार्ड स्वाइप करेगा। एक बार मैंने एक यात्री को व्हील चेयर पर बस स्टॉप पर इंतजार करते देखा। बस चालक ने बस रोकी और एक बटन दबाया और बगल से एक ढलान वाला प्लेटफार्म निकला। ड्राइवर नीचे आया और व्हील चेयर से बंधे यात्री को बस में घुसने में मदद की। फिर ड्राइवर ने व्हीलचेयर को बस में निर्धारित स्थान पर ले जाकर व्हील चेयर को क्लैंप से बांध दिया। मैं पूरी तरह से परिवहन व्यवस्था से प्रभावित थी ।

यात्राओं में सबसे बड़ी आफत होती है साफ–सुथरे शौचघरों का न मिलना। हम औरतों से पूछिए कितनी मुसीबत होती है हमें जब सफाई, स्वास्थ्य के साथ सुरक्षा का मसला भी जुड़ जाता है तो टॉयलेट जैसी मामूली सुविधा भी कितनी बड़ी बात लगने लगती है। अमरीकीपूंजीवाद होगा किसी के लिए कुछ भी, मुझ मामूली टूरिस्ट के लिए सड़कों, पार्कों, रेस्टरूमों की ऐसी सहूलियतें पूंजीवाद का सबसे उजला पक्ष है।

अमेरिकन्स सिर्फ क्लबों और पबों को गुलजार करते होंगे, कि हर दिन पार्टी करते होंगे, नाइटआउट उनका प्रिय शगल

होगा, कि अय्याशी के अड्डे हैं अमेरिकी शहर, कि मौज–मस्ती है उनकी जिंदगी के मायने .... ऐसी कितनी ही धारणाओं को तोड़ा है मेरी अमेरिका यात्रा ने!

अमेरिका के कितने ही शहर ऐसे भी हैं जहां nightlife नाम की कोई चीज है ही नहीं! कितने ही शहर ऐसे भी निकले जहां सूरज ढलते–ढलते जिंदगी थम–सी जाती है और फिर अगली सुबह के सूर्योदय के साथ जिंदगी दौड़ने निकल पड़ती है और गर्मियों के महीने जब राहत लेकर आते हैं तो पूरे देशभर में लोग निकल पड़ते हैं vacation पर। वैकेशन का ठिकाना Las Vegas या New York ही नहीं होता, वे चुनते हैं प्राकृतिक पार्कों को, अभयारण्यों को, हाइकिंग और ट्रैकिंग को, झीलों–नदियों में तरह–तरह के खेल और तैराकी से लेकर पहाड़ों पर बढ़ चलते हैं। ज्यादा दूर जाने की हैसियत न हो, फुर्सत न हो, नीयत न हो या हालात न हो तो भी वे घरों से बाहर रहना पसंद करते हैं दृ कुदरत की सोहबत में। हाइकिंग ट्रेल्स पर। अमूमन हर शहर के आसपास हाइकिंग ट्रेल्स होती हैं जिनमें सुबह–शाम, वीकडे पर और वीकेंड पर सैर करते, दौड़ते, साइकिल दौड़ाते, हांफते, मुस्कुराते लोग दिखते हैं।

अगर आप ड्राइव करना जानते हैं, और एक झटके में Left Hand Drive की बजाय Right Hand Drive के हिसाब से खुद को तैयार कर सकते हैं, तो यह देश आपको हाथों–हाथ रखेगा। पब्लिक ट्रांसपोर्ट इस देश में निल बटा अंडा न सही, मगर कोई बहुत अच्छा भी नहीं है। बस और रेल नेटवर्क की हालत लगभग दयनीय कही जा सकती है और लंबी दूरियों को नापने के लिए जहाजों की छलांगें हैं तो कम से औसत दूरियों के लिए कारें हैं। इंटरसिटी आवाजाही के लिए Uber/Lyft सहारा हैं लेकिन जेब पर दबाव कम करने के लिए रेंटल कारें ज्यादा माकूल होती हैं और फिर सड़कें होती हैं आपके पैरों तले।

मेरी बेटी अपने पहले सेमेस्टर के दौरान वह अपने विश्वविद्यालय के लिए बस से यात्रा करती थी । तब हम भी बस यात्रा का अनुभव कर पाये . अपने दौरे के दौरान, मैंने शहर के कई पहलुओं को देखा और प्रभावित हुई । उसके दूसरे सेमेस्टर के दौरान हमने उसके लिए एक कार खरीदी क्योंकि उसे बहुत यात्रा करनी थी और विषम घंटों के दौरान भी। हमने नियाग्रा फॉल्स और वाशिंगटन डीसी के लिए सड़क यात्रा करने का फैसला किया। घरेलू उड़ानें महंगी थीं और सामान के लिए अतिरिक्त शुल्क की आवश्यकता होती थी। इसलिए हमने सड़क यात्रा करने का फैसला किया। अपनी बेटी और पति के साथ, हमने सोचा कि हम अपनी कार चलाएंगे। किसी ने हमें कार किराए पर लेने की सलाह दी गई थी जो सस्ता विकल्प होगा और सड़क पर कोई खराबी या कोई अन्य समस्या होने पर हमें परेशान नहीं होना पड़ेगा। सबसे महंगी और फ्यूचरिस्टिक मॉडल की कारें सस्ते किराये पर उपलब्ध थीं।

रोड इंजीनियरिंग, रोड नेटवर्क इतना गजब का है कि रोड ट्रिपिंग किए बगैर इस देश में आवारगी का अनुभव अधूरा रह जाता है। इस देश ने अपनी सड़कों को इतनी तवज्जो दी है कि बाकायदा कार लॉबी का बोलबाला है और कारें हैं कि सांसों की तरह हैं। हर जगह, हर दम वही दिखती हैं और उनके बिना यहां जिंदगी की कल्पना भी नामुमकिन है।

अरे हां, चलते–चलते बता दूं कि यहां हर राज्य की कारों की नंबर प्लेट अपनी अलग ही कहानी बयान करती है। जैसे टैक्सस नंबर प्लेट पर दर्ज है – "The Lone Star State". वर्जीनिया की कारों पर – "Virginia is for Lovers" और नॉर्थ कैरोलाइना की कार राइट बंधुओं की पहली उड़ान के गर्वबोध का बयान थी – "The First Flight"। इसी तरह, मैसाच्युसेट्स की कारें अपनी अलग कहानी कह रही होती है – The Spirit of America- करें, दरअसल, यहां सिर्फ point A to B तक आवाजाही का साधन नहीं लगतीं मुझे, बल्कि ऐसा लगता है हर कार मालिक की पर्सनैल्टी का एक्सटेंशन बन गई हैं। फिलहाल कार पुराण इतना ही।

बेटी के Tennessee, USA में तीन साल के प्रवास के दौरान मैंने अपने दौरे के दौरान में अमेरिका के पूर्वी तट, पश्चिमी तट और उत्तर की ओर के लगभग सभी पर्यटन स्थलों को कवर किया है। मुझे लगता है कि भारत में अमेरिका की तुलना में बहुत सारे स्थान, ऐतिहासिक वास्तुकला और प्राकृतिक सुंदरता हैं। हालाँकि, हम भारतीयों में पर्यटन के मुद्रीकरण की कमी है। हाल के दिनों में भारत में स्वच्छ पर्यटन स्थलों और यात्रा में आसानी के संबंध में बहुत सुधार हुआ है और सुरक्षा, सूचना ब्रोशर, पर्यटक सूचना केंद्रों आदि के मामले में बहुत कुछ तेजी से करने की जरूरत है। मुझे

भूटान यात्रा का अनुभव

निरेन भट्टाचार्य
अपर निदेशक- पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

14 अप्रैल 2019, रोंगाली बिहू त्योहारों के मौसम के दौरान इन असम, हमने पारो नदी के किनारे अपनी यात्रा शुरू की यानी हिमालय के पहाड़ों की निचली श्रेणी में स्थित भूटान के लिए | हमारी यात्रा गुवाहाटी से न्यू अलीपुर (New Alipore) तक एक शोक ट्रेन से शुरू हुई | वहां पहुंचने के बाद, हमने भारत की सीमा पर स्थित जॉयगांव को पार करते हुए भूटान की सीमा में फुंटशोलिंग जाने के लिए टैक्सी किराए पर ली। भूटान की स्वच्छता और शांति, और पारंपरिक पोशाक "घो और किरा" में पुरुषों और महिलाओं ने हमें बधाई दी। वहाँ रात बिताने के बाद, हमने अगले दिन इमिग्रेशन ऑफिस से अपना वीज़ा लिया। हमने किराए की टैक्सी में पारो शहर की यात्रा की, जहां हमारे दोस्त और परिवार के सदस्य हमारे आने का इंतजार कर रहे थे। होटल खम्सुम में अपना सामान जमा करने के बाद हम पारो नदी के दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए निकल पड़े। रिपुंगजोंग द्ज़ोंग (फोर्ट) (Rinpungjong Dzong) की रोशनी ने नदी के साफ पानी को ऐसा चमका दिया मानो वह रत्नों का एक रिबन हो। किला एक सुंदर परिसर था जिसमें सभी प्रकार के प्रशासन कार्यालय, मोंक क्लब, बौद्ध मंदिर आदि थे।

पारंपरिक भूटानी पोशाक के साथ खुद को तैयार करना, जिसे हमने पास की एक दुकान से किराए पर लिया था, हमने अपनी यादों के लिए स्मृति चिन्ह के रूप में कुछ तस्वीरें लीं। अगले दिन सुबह-सुबह बौद्ध मठ, Taktsang के दौरे की शुरुआत हुई | समुद्र तल से 3120 मीटर की ऊंचाई पर मठ की प्रभावशाली ऊंचाई ने हमें इसकी एक छोटी सी झलक भी पकड़ने के लिए अपनी गर्दन को झुका दिया। शिखर तक की यात्रा एक कठिन यात्रा थी लेकिन पेड़ों और लाल रोडोडेंड्रोन फूलों के सुंदर दृश्य जो हमारे साथ थे और जिस मंजिल का हमें इंतजार था, उसने हमें एक के बाद एक कदम आगे बढ़ाया। यात्रा के अंत तक पहुँचते हुए, सुंदर मठ परिसर हमारी आंखों के सामने खुल गया और हमारी थकान दूर हो गई।

हमारी सांस की तकलीफ अब चढ़ाई के कारण नहीं बल्कि पहाड़ों के किनारे से निकली हुई सीढ़ियों और मजबूत दीवारों की वजह से थी| जब तक हम दृश्य को देख सकते थे हमने नजारा का आनंद लिया, और हमने वापस नीचे की यात्रा शुरू की। मठ परिसर में इसके भीतर 4 मंदिर और 8 गुफाएं और साथ ही बौद्ध भिक्षुओं के क्वार्टर हैं। सुबह 4 बजे प्रार्थना चक्र घुमाकर साधु हर नए दिन का स्वागत करते हैं।

अगले दिन, हम एक यात्री द्वारा थिम्पू गए और वहाँ 'झिंगखम' (Jhingkham) नामक एक सुंदर झोपड़ी (cottage) में रुके। हमने थिम्पू नदी के किनारे भूटानी राजा के शाही महल के साथ-साथ बुद्ध देव की 54 मीटर लंबी कांस्य प्रतिमा का भी दौरा किया। पुनाखा (Punakha)का लटकता हुआ लोहे का पुल एक और स्थल था जिसने हमें अपनी नसों के साथ खेलने और हमारे साहस का परीक्षण करने का प्रबंधन करते हुए मंत्रमुग्ध कर दिया। पर्यटन स्थलों के अलावा, वहां उपलब्ध भोजन जैसे चिकन पा, एमा दत्शी (Ema datshi) व्यंजन आदि ने हमारे स्वाद कलियों को नए मसालेदार स्वादों से समृद्ध किया।
और इस तरह हमने अपने 5 अविस्मरणीय दिन भूटान में बिताए।

"कटरा में मां वैष्णोदेवी के दर्शन"

मालती शर्मा
वित्त विभाग– पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

एक मानव मन की इच्छा होती है कि वो वह कार्य करे जो उसके अपने हित में और समाज के हित में हो। हम सभी अपने–अपने जीवन चक्र में अलग–अलग इच्छाएं, कामनाएं, मन्नतें आदि करते हैं और जब हमारी वह इच्छा पूर्ण हो जाती है तो अपने इष्ट का धन्यवाद, आभार और शुकराना करने उनके दर्शन करने को जाते हैं। भारत में भी अलग–अलग धर्मों और आस्था को मानने वाले लोग रहते हैं। कोइ मां वैष्णो देवी, कोई मक्का मदीना, कोई स्वर्ण मंदिर, कोई गिरजाघर, कोई तिरुपति आदि धार्मिक स्थलों पर अपने–अपने इष्ट का धन्यवाद करने जाते हैं।

मैंने भी कुछ साल पहले ऐसी ही एक मन्नत मांगी थी और उसके पूर्ण होने पर 9 अगस्त को हम माँ वैष्णो देवी के दर्शन करने परिवार सहित मां वैष्णो के धाम कटरा पहुंचे। मेरे कार्यालय के कुछ वरिष्ठ अधिकारी एवं मेरे सहकर्मी इस यात्रा से जुड़े तथ्यों के बारे में जिज्ञासु थे और वे भी माँ वैष्णो के धाम जाना चाहते हैं, इसलिये मैंने ये लेख लिखने का विचार किया और इस लेख में मैं मां वैष्णो देवी यात्रा से सम्बंधित महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में विस्तार से लिखने की कोशिश की है.

मां वैष्णो देवी के दर्शन करने श्रद्धालु पूरा साल भारी संख्या में कटरा पहुँचते हैं। कटरा जम्मू केंद्र प्रशासित क्षेत्र के अंतर्गत आता है। कटरा पहुँचने के लिए हवाई, रेल और रोड मार्ग से पहुंचा जा सकता है. मां वैष्णो के दर्शन के लिए अक्टूबर माह के नवरात्रों में बहुत भीड़ होती है और हो सके तो नवरात्रों के समय वहां ना जाएँ। बारिश के समय और ज्यादा सर्दी के समय भी यात्रा पर जाना टाला जा सकता है।

मां वैष्णो देवी के दर्शन के निकलने के 2 महीने पहले ही ऑनलाइन बुकिंग करनी होती है जिसके लिए इनकी ओफिशिअल वेबसाईट है जिसका पाथ है : www.maavaishnodevi.org इस वेबसाइटपर रजिस्टर करके अपना अकाउंट बनाना होता है। इनका मोबाइल एप्प है maavaishnodevi को Android फोन से प्लेस्टोर पर जाकर डाउनलोड किया जा सकता है। इनकी साईट पर आपको सभी सुविधाओं के बारे में विस्तृतजानकारी प्राप्त हो जाती है। इनकी साईट पर आपको हेल्पलाइन नंबर भी मिल जायेंगे जिनसे आप यात्रा से जुडी कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अपने मोबाईल से हमने जो भवन कि फोटो ली वो नीचे दी गयी है।

यात्रा से 2 महीने पहले, सबसे पहले लॉगइन करने के बाद हमने मां वैष्णो भवन पर विश्रामग्रहों के बारे में स्थिति देखी। भवन पर कोई भी रूम खाली नहीं था। फिर हमने देखा कि सांझी छत पर एक रूम मनोकामना भवन में खाली है और हमने उसकी ऑनलाइन बुकिंग कर दी। इसके पश्चात हमने IRCTC की वेबसाइट पर अपना लॉगइन करके नई दिल्ली से कटरा की ट्रेन बुक की, जिसमें हमने एक डिब्बे की चारों सीट बुक कर दीं। IRCTC की वेबसाइट पर ही हमने कटरा में IRCTC का गेस्ट हाउस भी बुक कर दिया जो हमें बहुत उचित दाम में मिल गया। कई सालों बाद हम सपरिवार रेल यात्रा पर जा रहे थे जो बहुत रोमांचकारी था। हम सभी बहुत उत्साहित थे। यात्रा पर निकलने से एक हफ्ते पहले हमने मां वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की वेबसाइट पर सबकी ऑनलाइन यात्रापर्ची भी निकाल ली। ये यात्रापर्ची हमें चढ़ाई से लेकर भवन पहुँचने तक अपने पास संभालकर रखनी होती है। जगह जगह चेकपोस्ट पर इसकी चेकिंग होती है। यात्रा के दौरान चढाई में हमें सभी पर्चियों की हार्ड कॉपी ही अपने पास रखनी चाहिए क्योंकि वहां पर इन्टरनेट कनेक्टिविटी ठीक काम नहीं करती और साथ ही कुछ भी खरीदने के लिए कैश राशि रखनी चाहिए क्योंकि इन्टरनेट कनेक्टिविटी ज्यादा अच्छी ना होने से paytm, गूग्लपे आदि भी ठीक से काम नहीं करता।

निर्धारित तारीख को हमारी ट्रेन रात 7 बजे की थी और हम समय से एक घंटे पहले नई दिल्ली स्टेशन पर पहुँच गए थे। ट्रेन आधे घंटे पहले ही स्टेशन पर लग गयी थी। हम रात का भोजन घर से ही बनाकर ले गए थे। गाडी में बैठने के करीब दो घंटे बाद हमने रात का भोजन किया और सो गये। नई दिल्ली से कटरा के लिए हमने श्री शक्ति एक्सप्रेस

ट्रेन बुक की थी। जब मेरी आँख सुबह 5 बजे खुली तो बाहर का दृश्य देखने लायक था हरी हरी पहाड़ियां बहुत ही स्वच्छ और सुन्दर लग रही थीं। निर्धारित समय पर हमारी ट्रेन सुबह 6 बजे कटरा स्टेशन पर पहुँच गयी। हमने बच्चों को उठाया और सामान समेटकर हम कटरा स्टेशन पर उतर गए। हम सबने कटरा स्टेशन पहली बार देखा था जो चारों तरफ से हरे पहाड़ों से आच्छादित था, बहुत ही मनोरम दृश्य था। पूरा स्टेशन भारत सरकार के सुरक्षा कर्मियों से सुरक्षित था। हमने कुछ तस्वीरें अपने मोबाईल से लीं और स्टेशन के ऊपर बने गेस्ट हाउस में पहुँच गएँ। कटरा स्टेशन की फोटो।

गेस्ट हाउस में हमें रूम मिल गए थे जो बहुत स्वच्छ और बड़े थे. स्नानादि के पश्चात हमने गेस्ट हाउस के रेस्टोरेंट में सुबह का भोजन किया जो कोम्प्लिमेंटरी था। गेस्ट हाउस वालों ने ही हमारे लिए टेक्सी उपलब्ध करा दी थी जो हमें बाढ़ गंगा तक छोड़ आई थी और जहाँ से यात्रा आरम्भ होती है। हमने यात्रा के लिए एक–एक जोड़े कपडे और सबके लिए एक–एक ऊनी स्वेटर रख लिया था। यात्रा काफी ऊँची ऊँची पहाड़ियों से बने रास्ते पर है इसलिए बहुत पसीने आते हैं और जिसके कारण शरीर में पानी की कमी भी हो जाती है। इसलिए हमने अपने साथ 2 पानी की बोतले रख ली थीं। वैसे पूरी यात्रा के दौरान, पीने के पानी की व्यवस्था जगह–जगह पर की गयी है। यात्रा ऊंचाई पर है और लम्बी भी है इसलिए हमने यात्रा शुरू होने से पहले ही एक पिटठू कर लिया था जिसने एक परेम (बच्चों की गाढ़ी) में हमारे सभी बैग और पानी की बोतले रख ली थीं। और इस तरह हम सभी माता रानी का जयकारा लगाके चल पड़े माता के दर्शन के लिए। पूरी यात्रा के दौरान श्रद्धालु माता के जयकारे लगाते हुए जा रहे थे, दोनों तरफ सुंदर पेड़ों के आच्छादित ऊंचे ऊंचे पहाढ़। कोहरे से ढके हुए पहाड़ों की फोटो।

अर्ध्कुवारी से कुछ पहले ही यात्रा के दो रास्ते हो जाते हैं, एक रास्ता हाथीमत्था से जो अर्ध्कुवारी से होते हुए भवन जाता है और जिस रास्ते में बहुत चढ़ाई है और दुसरा रास्ता समतल है और जहाँ पर इलेक्ट्रिक कार भी चलती हैं, जिसकी बुकिंग ऑनलाइन अथवा वहां पहुंचकर भी कर सकते हैं। ये इलेक्ट्रिक कारें भवन से आती जाती रहती हैं। हमने भी इसी समतल रास्ते से जाने का फैसला किया और ये रास्ता आसान था। शाम को करीब 5.30 बजे हम भवन

पहुँच गए। वहीं हमने घाटों पर स्नानादि करके अपने बैग और जूते लाकर रूम जो गेट नंबर 3 पर है, में जमा करा दिए और भवन की ओर चल पड़े। रास्ते से ही हमने श्राइन बोर्ड द्वारा संचालित भेंट शॉप से प्रसाद भी ले लिया था। शाम की आरती 6.30 पर होती है और हम शाम 6 बजे ही लाइन में लग गए, हमें बिलकुल भी भीड़ नहीं मिली और हमने आधे घंटे में माता के दर्शन कर लिए। भवन में अधिकांशतः बारिश रहती है और हमें बहुत अच्छे दर्शन हुए, ऐसा लगा जैसे यात्रा की सारी थकान ही मिट गयी। हमारे परिवार की यात्रा की फोटो।

दर्शन कर हमने श्राइन बोर्ड द्वारा संचालित भोजनालय में भोजन किया, ये भोजनालय यात्रा के दौरान जगह जगह पर मिलते हैं जहाँ पर उचित दर पर भोजन कि व्यवस्था की गयी है। इसके पश्चात हमने लाकर रूम से अपने बैग और जूते निकाले और निकल पड़े सांझी छत की ओर जहाँ पर हमने एक रूम की ऑनलाइन बुकिंग कर रखी थी। हमने भवन के बाहर स्थित दुकान से चार बरसाती खरीद ली थीं क्योंकि बारिश बहुत तेज थी और अपने स्वेटर्स भी पहन लिए थे। रात में श्रादुलुओं का आना जाना थोड़ा कम हो जाता है। सांझी छत पहुंचकर हमने मनोकामना भवन में रात को करीब 9 बजे चेक–इन किया। कमरे में सभी सुविधाए थी, हीटर, गीजर, कम्बल आदि। इस कमरे में कम से कम 12 कम्बल तह करके रखे हुए थे. बाहर बहुत तेज बारिश हो रही थी और गहरा कोहरा छाया हुआ था। हम लोग बहुत थके हुए थे और लेटते ही नींद आ गयी। यात्रा में बने शेड्स की फोटो.

सुबह हम करीब 6 बजे उठे और अपना सभी सामान पैक करके और भोजनालय में सुबह का नाशता करके करीब 11 बजे सांझी छत से कटरा के लिए निकल पड़े। रास्ते में बहुत तेज बारिश थी और ऐसा लग रहा था जैसे कोहरे की सफेद चादर ने ऊंचे ऊंचे पहाड़ों को ढक लिया हो। उतरना हमारे लिए ज्यादा आसान था। नीचे आते आते बारिश भी बंद हो गयी थी। शाम को करीब 6 बजे हम कटरा उतर आये। बाढ गंगा पे हमारी यात्रा खत्म हुई और हमने एक टैक्सी की और कटरा स्टेशन पर आ गए जहाँ गेस्ट हाउस में हमारा रूम बुक था। गेस्ट हाउस आकर हमने रात का खाना खाया और कटरा बाजार से कुछ और प्रसाद और भेंटें खरीद लीं। हमने जल्दी– जल्दी अपना सामान पैक किया और कटरा स्टेशन पर आ गए जहाँ हमारी नई दिल्ली जाने वाली ट्रेन तैयार खडी थी। हमारी ट्रेन का समय रात 11 बजे था लेकिन ट्रेन 10.30 बजे ही स्टेशन पर लग गयी थी। हम अपना सामान लेकर ट्रेन में चढ गए और बिस्तर बिछाकर सो गए क्योंकि यात्रा की थकान थी और लेटते ही नींद भी आ गयी। हमारी ट्रेन सुबह 10.30 बजे नई दिल्ली पहुँच गयी और इस प्रकार पूर्ण हुई हमारी मां वैष्णो देवी की यात्रा।

जय माता दी!!!!

हिंदी

तिलक राज दुआ
निजी सचिव मांग–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

हिंदुस्तान की शान है हिंदी
हर दिल का अरमान है हिंदी
हिंदुस्तान की पहचान है हिंदी

हर जन की यही अभिलाषा
सभी अपनायें हिन्दी भाषा
हिन्दी मेरे देश की पहचान
मेरा गौरव मेरा अभिमान

अंग्रेजी से नाता तोड़ो
हिन्दी से जन जन को जोड़ो
हिन्दी सप्ताह को सफल बनाना है
व्यव्हार में हिन्दी को अपनाना है

मेरे गुरु

सरस्वती जोशी
संयुक्त निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

जिस पल थामी, नन्ही सी ये कलाई।
उस पल ही मन मे, गुरु नाम की दस्तक थी आई।
कदम है मेरे, राह तो उन्होने ही बनाई।
शब्द है मेरे, सोच तो उन्होने ही सिखाई।।

समंदर मे हो, जितनी गहराई।
गुरुज्ञान मे, उतनी ही सच्चाई।
मै थमा सा था, बनकर इक छोटीसी नैया।
गुरु ने ही तब , इसकी पतवार इक बनाई।।

पेडो की सूखी टहनी देखी।
गुरुज्ञान से की सिंचाई।
फिर जब उसपर हरियाली आई।
गुरु की महिमा जग को दिखलाई।।

राम के हो, वशिष्ट तुम।

पांडव के भी, द्रोणा तुम।

सत्ययुग से है, तुमको पूजा।

कलयुग मे है, मेरी ये पूजा।

इस युग मे ही पाया तुमको।

पर चारो युग की, छाया तुम हो।।

गोविंद कहे गुरु का तो है जन्मो का साथ।

पुजो ऐसो जैसो, गोविंद ही हो तेरो पास।

उस गोविंद बने गुरुओं को।

आओ करे हम मिलकर शत शत प्रणाम।।

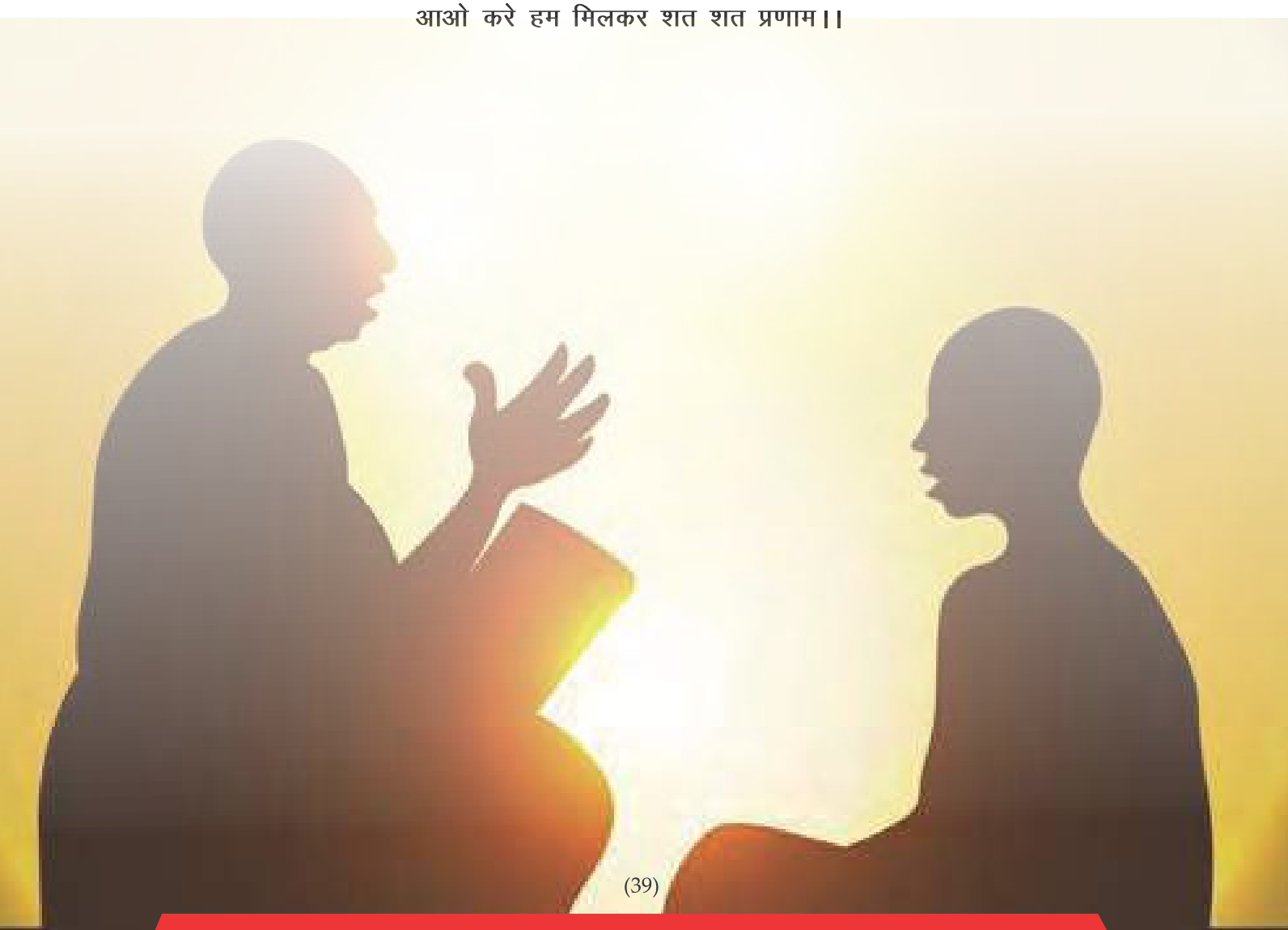

भविष्य के रिश्ते

घनश्याम
अपर निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

पिता ने पुत्र के चरण स्पर्श किये और कहा

क्या आज्ञा है मेरे लिए

पुत्र ने कहा,

हे चिरंजीवी बाप!

इससे पहले कि आपसे शुरू करूँ वार्तालाप

एक बीडी पिलाइये

पाँव जरा धीरे दबाइये

माँ के नहीं मेरे पाँव हैंद्य

पिता ने पुत्र की बीड़ी सुलगाई

और खुद भी खींच के ऐसी दम लगाई

के बीड़ी के प्राण पखेरू उड़ गए

बेटे के होंठ मारे गुस्से के सिकुड़ गए

बाप से बोला तू बाप है या फजीता है

बेटे के सामने बीडी पीता है

अबे जोरू के गुलाम

यूँ ही रोशन करेगा बेटे का नाम।

भारत मेरा सबसे प्यारा

रोली श्रीवास्तव
सहायक निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

भारत मेरा सबसे प्यारा
सब देशों में सबसे न्यारा,
आओ मिलकर गाए गान,
मेरा भारत देश महान।
धरती हरी भरी है
खुशबू फूलों की न्यारी,
ऊंचे पर्वत खड़े महान,
अद्भुत ऐसी इसकी शान।
झरने झर झर इसमें बहते,
गीत वीरता के वे कहते,
भरे भरे इसके खलियान,
वीरों की भारत है खान।
भारत की है बात निराली
गाथा इसकी हिम्मतवाली
भारत का है जन–जन न्यारा
भारत जग में सबसे प्यारा।

आयल एंड गैस डाटा का सेनापति -पीपीएसी

ऋत्विक कुमार हातियाल
संयुक्त निदेशक–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ग क्षेत्र)

पीपीएसी–विश्लेषण सेल है
भारत के तेल और गैस डाटा का आधार
उत्कृष्ट क्षमता के अधिकारी
रहते डेटा संशोधित करने को प्रतिपल तैयार!
रचते ये डेटा के इंद्रधनुष
जो आते राष्ट्र के काम
मंत्रालय करता निर्णय
देता लोगों को अद्भुत परिणाम!
करता ये तेल और गैस के
भविष्य का निर्माण
इसके उत्कृष्ट कार्य से
मिलता इसको सम्मान

वो दिन

सूर्यभान मल
सहायक निदेशक–आपूर्ति पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

मेरा पहला पड़ाव,

मेरे इंजीनियरिंग कॉलेज के वह चार साल,

मेरे वो चार बेहतरीन साल,

वैसे वो दिन काफी कठिनाइयों में बीते थे।

पर मैं दावे के साथ कह सकता हूँ की वो दिन मेरी जिन्दगी के सबसे अनमोल पल थे,

दोस्तों के साथ कब दिन बीत गए, पता ही नहीं चला,

पर आज उन पलों को याद करता हूँ तो ऐसा लगता है की कल ही तो क्लास बंक करने की बात चल रही थी,

वो रात की चाय।

वो परीक्षा से एक दिन पहले की घनघोर तैयारी,

वो होली में वार्डन का पीछे दौड़ना,

वो मेस का बेस्वाद खाना,

आँखें बंद करता हूँ तो हलकी सी हसी छूट जाती है।

फिर आता है प्लेसमेंट का वो दिन,

जिसका कॉलेज के टोपर को बड़ी बेसब्री से इंतजार रहता है,

और यहाँ शर्ट किसी और की, काली पैन्ट किसी और का और बेल्ट का ठिकाना नहीं.

चले गए जैसे मानो इंटरव्यू लेने वाला चाचा हो हमारा।

खैर, बड़ी शिद्दतों के बाद इंटरव्यू के बाद नौकरी लग गयी,

और कॉलेज का आखरी दिन आ गया,

लड़कों की एक खास बात होती है,

हम लोग खुशी तो बाँट लेते हैं।

पर दुख बाटना हमारी मर्दानगी को शोभा नहीं देता,

वादे तो बहुत हुए थे,

की टच में रहेंगे वगेरह वगेरह,
जहां पच्चीस तीस लोगों का झुण्ड हुआ करता था।
हर काम के लिए एक लड़का फिक्स था,
पैसे नहीं हैं तो अंशुल,
कुछ चटपटा खाने का मन है तो हमारा गुजराती भाई जीतेन पटेल,
हॉस्टल में चाय पीने के लिए निखिल।
ऐसे सब कामों के लिए एक एक लड़का निर्धारित था,
और अब,
अब सिर्फ तीन चार ही लोगो से बात होती है,
वो भी महीने में एक बार।
सब अपनी जिन्दगी में व्यस्त हैं,
सब पर जिम्मेदारी है,
कोई अपने बीवी बच्चों को संभाल रहा है,
कोई अपने माता पिता को।
कुछ लोग तो अपने आप को भी संभाल रहे हैं,
इसलिए मेरे दोस्त,
कॉलेज तो सब जाते हैं,
पर सिर्फ कुछ खुशकिस्मत लोग,
इंजीनियरिंग कॉलेज जाते हैं।

भारतीय महिला क्रिकेट

विवेक पंत
सहायक निदेशक–आपूर्ति पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

क्रिकेट वो खेल है जो सम्पूर्ण भारतवर्ष को
साथ मे लाता है,

विभिन्न धर्मो के लोगो को करता है एक ,
कभी कभी क्रिकेट धर्म भी कहलता है।

पुरुषों ने इसमें अपना पर्चम लहराया है अब
महिलाओं की बारी है,

अगला विश्व कप जीतेंगी महिलाएं,

बस अब उसकी ही तैयारी है।

मिताली राज की कप्तानी,

झूलन गोस्वामी की गोली सी आती गेंद,

प्रतिद्वंदी के उड़ाती है छक्के

और रणनीतियों को देती है भेद।

हरमनप्रीत के चौके, वेदा कृष्णमूर्ति का छेत्र
रक्षण,

सफलता के शिखर को छुएगी

भारतीय महिला क्रिकेट दल ,दिख रहे है
लक्षण।

एकता बिष्ट हो या पूनम यादव,

सभी खिलाड़ियों का अकल्पित योगदान

देशवासियों का शीर्ष ऊंचा रखता है,

अद्भुत हैं ये महिलाएं , हैं ये महान।

एक से एक कीर्तिमान भंजक हैं हमारे दल में,

बचना मुश्किल है विरोधियों का ,

एक मुकाम तक पहुँच गए है ,

अब शिखर छूना है बुलंदियों का।

इस स्तर तक पहुँचने की राह नहीं थी आसान ,

कड़ी मेहनत करी है इन नारियों ने,

कई कुर्बानियाँ दी हैं,

कई दुख सहे हैं,अपने मकसद को पाने में।

हम नमन करते हैं अपनी

भारतीय महिला दल को बार बार,

जीतो और पहुँच जाओ शीर्ष पर ,

बनो करोड़ो महिलाओं के लिए मिसाल ।

हिन्दुस्तान कहलाती हिंदी

विनोद यादव
सहायक निदेशक (प्रशासन)–पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

फसलों सी लहराती, कलकल बहती जाती हिंदी,
कहीं हरियाणवी, कहीं बुंदेलखंडी, तो कहीं सिंधी बन जाती हिंदी
कहीं छांव में ,कहीं धूप में, कहीं पंचस्वर में गाती हिंदी,
कहीं आंगन में खिलखिलाती, तो कहीं तोतली बन जाती हिंदी,
कहीं लोग कथाओं में गूंजती, वीरों की गाथा सुनाती हिंदी
भारत की धरती में महकती, हर मां की माथे की बिंदी,
हिंदी है हम वतन हैं, हिंदुस्तान कहलाती हिंदी।

आजादी के गीतों में पसरी, शहीदों की चिताओं पर शीश झुकाती हिंदी,
रंग जाती बसंती चोले में, झांसी की तलवारों में सजाई जाती हिंदी
गंगा के जल में थिरकती ,गांव शहर आवाज लगाती हिंदी
सरदार के अटल प्रण सी, बापू के भाषण में मुस्कुराती हिंदी
मिश्री के दानों सी घुलती ,सरपट कूद लगाती हिंदी
सर पर ममता के आंचल के जैसी,हिंदुस्तान के माथे की बिंदी
हिंदी है हम वतन है, हिंदुस्तान कहलाती हिंदी।

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए कार्य-1

दिनांक 24.03.2022 को पीपीएस में
सभी कर्मचारियों के लिए हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए कार्य-2

दिनांक 24.06.2022 को पीपीएस में
नवनियुक्त अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किए कार्य-3... जारी है...

आवश्यक हिन्दी टिप्पणियों के साथ माउस पैड

तृतीय पेट्रोलियम राजभाषा सम्मेलन (09 सितम्बर 2022), नई दिल्ली

सूरज, हवा और सनबर्ड्स

डॉ पंकज शर्मा
अपर निदेशक–मांग व आर्थिक अध्यन, पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

जब खूबसूरत चीते नामीबिया से लंबी उड़ान से कुनो नेशनल पार्क पहुंचे, तो लगभग उसी समय कहीं से एक छोटी सी चिड़िया ने मेरी बालकनी में उड़ान भरी और एक गाना गाया। इतनी छोटी कि वह इस पल दिखाई दे रही थी और दूसरे पल उड़न झू ।

मैंने अपनी खिड़की के शीशे से झाँका और उसके गायब होने से पहले कुछ तस्वीरें खींच लीं । पीले पेट वाली खूबसूरत चिड़िया ने मुझे यह जानने के लिए उत्सुक किया कि वह है कौन और मैंने उसे पहले क्यों नहीं देखा। गूगल कहता है, वह पीले पेट वाली सनबर्ड है। उसने यह भी कहा कि ये पक्षी मनुष्यों के साथ रहने के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित हो गए हैं, और शहरों में देखे जाते हैं लेकिन यह उतना ही सच है जितना कि गौरैया को अब भी 'घरेलू' गौरैया कहना, जबकि वे प्रदूषित काली हवा में गायब हो गयी हैं।

अब दुनिया पहले से कहीं अधिक जलवायु परिवर्तन के बारे में बात कर रही है। ग्लोबल वार्मिंग जैसे शब्द अब चाउमिन, पिज्जा और बर्गर की तरह आम हैं। राजनीतिक और आर्थिक एजेंडे जो क्षेत्रीय और हित आधारित होते जा रहे हैं, की तुलना में देश अक्सर जलवायु मुद्दों पर वैश्विक स्तर पर मिलते हैं। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन, जिसे आमतौर पर सीओपी के रूप में जाना जाता है, एक चौथाई सदी से अधिक से हर साल बैठक कर रहा है। COP27 के लिए वे इस नवंबर में फिर से शर्म अल शेख में मिल रहे हैं और यहां सबसे बड़ा एजेंडा है कथनी और करनी की दूरी को मिटाना है।

लेकिन समस्या यह है कि राष्ट्र एक–दूसरे से अधिक उत्सर्जन तटस्थ होने के लिए प्रतिस्पर्धा करने के बजाय, चाहते हैं कि दूसरे उनसे अधिक सक्रिय हों। जो देश ऊर्जा की असीमित खपत कर रहे हैं और प्रति व्यक्ति आधार पर दूसरों की तुलना में कहीं अधिक उत्सर्जन कर रहे हैं, वे संकेतकों पर ऐसे डिलिवरेबल्स डिजाइन करते हैं जो बड़ी आबादी के कारण भारत जैसे कम प्रति व्यक्ति उत्सर्जन वाले देशों को कमतर आंकते हैं क्यूँकि उनका कुल उत्सर्जन अधिक है।

इस विषय पर भारत का दृष्टिकोण बिलकुल स्पष्ट है। वह अपने स्वनिर्धारित मार्ग पर चलने और सही समय पर शेष विश्व का साथ देने के लिये स्पष्ट प्रतीत होता है। यह आवश्यक भी है, क्योंकि भारत को अपनी बड़ी आबादी के लिए बेहतर जीवन (LIFE) के लिए पलायन वेग गति से बढ़ना है और भारतीय प्रधान मंत्री ने बहुत सुन्दरता से जीवन (LIFE) को Lifestyle For Environment अर्थात पर्यावरण के लिए जीवन शैली के रूप में उपयुक्त रूप से परिभाषित किया है, नासमझ और विनाशकारी खपत के बजाय, बौद्धिक रूप से सजग उपयोग के साथ, पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली।

जब हम जलवायु परिवर्तन और उत्सर्जन की बात करते हैं तो एक शब्दावली जो हमारे समक्ष बार बार आती है वह है, नेट जीरो। तो ये नेट जीरो है क्या ? नेट जीरो का अर्थ है कि वातावरण में उत्सर्जित कार्बन और उसमें से निकाले गए कार्बन के बीच संतुलन प्राप्त करना। यह संतुलन – या नेट जीरो तब होगा जब हम वायुमंडल में हमारे कार्य कलापों से छोड़ी गयी कार्बन की मात्रा एब्जॉर्ब की गई मात्रा से अधिक नहीं होगी।

दूसरी और वैज्ञानिक वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करने और तापमान वृद्धि को पूर्व–औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयासों को अच्छी जलवायु के संकेत के रूप में परिभाषित करते हैं। ये अलग बात है कि अभी जिस तरह हम उत्सर्जन कर रहे हैं, इस सदी के अंत तक पृथ्वी का तापमान घटने के स्थान पर 3 से 4 डिग्री तक बढ़ने की आशंका है। ऐसी स्थिति में संसार के सभी देशों का उत्तरदायित्व है कि ऐसे कदम उठायें कि ये दुनियां हमारे और पशुओं और पक्षियों के रहने योग्य रहे।

मेरे जैसे आम नागरिक के लिए वह संकेतक तापमान न होकर वह दिन होगा जब सनबर्ड के झुंड मेरी बालकनी में उड़ते हुये आयेंगे और घोंसला बना कर अपने हरे–नीले अंडे देगें। आमीन ।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (14-15 सितम्बर 2022), सूरत

प्राकृतिक गैस का भारतीय अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण पर प्रभाव

डॉ राजेश शर्मा
अपर निदेशक–गैस, पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

भारत में प्रति वर्ष जनसंख्या में लगभग 1% की वृद्धि के साथ खनिज तेल, प्राकृतिक गैस और कोयले जैसे ईंधन की मांग भी निरंतर बढ़ रही है। ऊर्जा के इन गैर–नवीकरणीय स्रोतों पर संपूर्ण अर्थव्यवस्था निर्भर रहती है। यह सर्वविदित है कि प्राकृतिक गैस वैश्विक ऊर्जा उपभोग में लगभग एक चौथाई योगदान देती है। भारत में प्राकृतिक गैस का हिस्सा उपभोग की गई ऊर्जा का केवल 6% है एवं भारत में कच्चे तेल और कोयले का प्रभुत्व है। भारत सरकार ने 2030 तक प्राकृतिक गैस का योगदान 15% तक बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। प्राकृतिक गैस वर्तमान समय में एक आशाजनक ऊर्जा स्रोत के रूप में अपनी पहचान बना रही है क्योंकि यह उसी मात्रा में ऊर्जा उत्पादन हेतु कणिका (पर्टिकुलेट) पदार्थ, राख और ग्रीनहाउस गैसों के कम उत्सर्जन के कारण अपेक्षाकृत एक शुद्ध ईंधन है।

ईंधन के रूप में प्राकृतिक गैस का सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी होगा। एलपीजी सिलिंडर, जिन्हें बार–बार भरने की आवश्यकता होती है, के विपरीत पाइपलाइन गैस शहरी घरों में स्वच्छ ईंधन की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। ग्रामीण घरों में एलपीजी का उपयोग न केवल एक स्वस्थ जीवन शैली सुनिश्चित करेगा, बल्कि लकड़ी एकत्रित करने और चूल्हा जलाकर खाना पकाने में लगने वाले बहुत अधिक समय को बचाएगा। भोजन पकाने के इन ईंधन को अपनाने से भविष्य में पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। प्राकृतिक गैस के बढ़ते उपयोग से एलएनजी वितरण केन्द्र (टर्मिनल), नगरीय गैस परियोजना (सिटी गैस प्रोजेक्ट) और पेट्रोरसायनिक संयंत्र (पेट्रोकेमिकल प्लांट) के रूप में रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

भारत में गैस उत्पादन एवं उपभोग के गत वर्षो के आंकड़ों के आधार पर प्राकृतिक गैस के विभिन्न रूपों के उपयोग का पूर्वानुमान यह दर्शाता है कि 2040–2050 तक भारत में प्राकृतिक गैस के भंडार लगभग खाली हो जाएंगे, और इस कारण घरेलू स्तर पर उत्पादित गैस की कीमत दोगुनी हो जाएगी। वास्तव में, घरेलू गैस का उत्पादन 2011 से निरंतर घट रहा है। जिससे ईंधन की कमी का सामना करने के लिए सरकार को मालवाहक जहाजों के माध्यम से लाए जाने वाले आयातित तरलीकृत प्राकृतिक गैस यानि एलएनजी पर भरोसा करने की आवश्यकता होगी। ईंधन की बढ़ी हुई कीमतों के कारण, घरेलू प्राकृतिक गैस के बड़े उपभोक्ता जैसे बिजली, खाद और परिवहन क्षेत्र भी आयातित एलएनजी पर बहुत अधिक निर्भर हो जायेंगे । घरेलू गैस केवल शहर के उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध होगी जो भोजन पकाने के लिए इसका उपयोग करते हैं। इसलिए गैस के उत्पादन एवं आयात में एक संतुलन बनाये रखना अति आवश्यक है । प्राकृतिक गैस के समुचित उपयोग से हम भारतीय अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण सरंक्षण के साथ उर्जा आत्म–निर्भर भारत की ओर अग्रसर होंगे ।

जय हिन्द!!

स्वच्छ ऊर्जा के लिए भारत का मार्ग

मोहिंदर वर्मा
अपर निदेशक–गैस, पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(ख क्षेत्र)

भारत की घोषणा कि 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन तक पहुंचना है और 2030 तक अक्षय ऊर्जा स्रोतों से अपनी बिजली की जरूरतों का पचास प्रतिशत पूरा करना जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक लड़ाई के लिए एक बेहद महत्वपूर्ण क्षण है। भारत आर्थिक विकास के एक नए मॉडल का नेतृत्व कर रहा है जो कार्बन–गहन दृष्टिकोण से बच सकता है जिसे कई देशों ने अतीत में अपनाया है – और अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक खाका प्रदान करता है।

भारत में परिवर्तन का स्केल आश्चर्यजनक है। पिछले दो दशकों में इसकी आर्थिक वृद्धि दुनिया में सबसे अधिक रही है, जिसने लाखों लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। हर साल, भारत अपनी शहरी आबादी में लंदन के आकार का एक शहर जोड़ता है, जिसमें नए भवनों, कारखानों और परिवहन नेटवर्क का विशाल निर्माण शामिल है। कोयले और तेल ने अब तक भारत के औद्योगिक विकास और आधुनिकीकरण के आधार के रूप में काम किया है, जिससे भारतीय लोगों की बढ़ती संख्या को आधुनिक ऊर्जा सेवाओं तक पहुंच प्रदान की जा रही है। इसमें पिछले एक दशक में हर साल 50 मिलियन नागरिकों के लिए नए बिजली कनेक्शन जोड़ना शामिल है।

जीवाश्म ऊर्जा की खपत में तेजी से वृद्धि का मतलब यह भी है कि भारत का वार्षिक CO_2 उत्सर्जन दुनिया में तीसरा सबसे अधिक हो गया है। हालाँकि, प्रति व्यक्ति भारत का CO_2 उत्सर्जन इसे दुनिया के उत्सर्जकों के नीचे रखता है, और यदि आप प्रति व्यक्ति ऐतिहासिक उत्सर्जन पर विचार करते हैं तो वे अभी भी कम हैं। ऊर्जा की खपत के बारे में भी यही सच हैः भारत में औसत परिवार संयुक्त राज्य में औसत घर की तुलना में दसवें हिस्से में बिजली की खपत करता है।

भारत के विशाल आकार और विकास की इसकी विशाल गुंजाइश का मतलब है कि आने वाले दशकों में इसकी ऊर्जा मांग किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक बढ़ने के लिए तैयार है। 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन के मार्ग में, हमारा अनुमान है कि इस दशक में ऊर्जा की मांग में अधिकांश वृद्धि को पहले ही कम कार्बन ऊर्जा स्रोतों से पूरा करना होगा। इसलिए यह समझ में आता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2030 के लिए अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की घोषणा की है, जिसमें 500 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित करना, इसकी अर्थव्यवस्था की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करना और एक अरब टन CO_2 को कम करना शामिल है।

ये लक्ष्य दुर्जेय हैं, लेकिन अच्छी खबर यह है कि भारत में स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण पहले से ही चल रहा है। इसने अपनी प्रतिबद्धता से लगभग नौ साल पहले गैर–जीवाश्म ईंधन से अपनी बिजली क्षमता का 40% पूरा करके सीओपी 21–पेरिस शिखर सम्मेलन में की गई अपनी प्रतिबद्धता को पूरा कर लिया है और भारत के ऊर्जा मिश्रण में सौर और पवन की हिस्सेदारी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। तकनीकी विकास, स्थिर नीति समर्थन और एक जीवंत निजी क्षेत्र के सौर ऊर्जा संयंत्रों के कारण कोयले की तुलना में निर्माण करना सस्ता है। भारत में नवीकरणीय बिजली किसी भी अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्था की तुलना में तेज दर से बढ़ रही है, नई क्षमता वृद्धि 2026 तक दोगुनी होने की राह पर है। देश आधुनिक बायोएनेर्जी के दुनिया के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है और इसके उपयोग को बढ़ाने की बड़ी महत्वाकांक्षाएं हैं। आईईए को उम्मीद है कि भारत अगले कुछ वर्षों में कनाडा और चीन से आगे निकल जाएगा और संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राजील के बाद दुनिया भर में तीसरा सबसे बड़ा इथेनॉल बाजार बन जाएगा।

पीपीएसी की प्रासंगिकता : समकालीन युग में ऊर्जा परिदृश्य

अवन्तिका गर्ग तायल
सहायक निदेशक – मांग व आर्थिक अध्यन पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
(क क्षेत्र)

पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ (PPAC) की भूमिका पिछले कुछ वर्षों में बदल रही है और यह भारत के बदलते ऊर्जा परिदृश्य के लिए खुद को ढाल रहा है। पीपीएसी की स्थापना पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (MoPNG) के एक संलग्न कार्यालय के रूप में 1 अप्रैल 2002 में प्रशासनिक मूल्य तंत्र (APM) और तेल समन्वय समिति (OCC) को समाप्त करने के बाद की गई थी।

ऊर्जा भारत जैसे देश के लिए सामाजिक–आर्थिक विकास और विकास का मुख्य आधार है जो वर्तमान में तीसरा सबसे बड़ा प्राथमिक ऊर्जा उपभोक्ता है जबकि इसकी प्रति व्यक्ति ऊर्जा खपत वैश्विक औसत का केवल एक तिहाई है। यह निकट भविष्य में भारत द्वारा ऊर्जा की खपत बढ़ाने के लिए एक अवसर प्रदान करता है और यह वैश्विक ऊर्जा कथा में केंद्रीय प्रेरक शक्ति है। बदलते ऊर्जा मिश्रण के संदर्भ में तेल और गैस क्षेत्र ने हाल के वर्षों में पर्याप्त परिवर्तन देखा है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में सूचना का संग्रह और विश्लेषण सरकार की ऊर्जा नीतियों को तैयार करने में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय को निविष्टियां प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण घटक बन गया है। यह PPAC को भारत में ऊर्जा के क्षेत्र से संबंधित समय पर, विश्वसनीय और सटीक जानकारी को बनाए रखने और प्रसारित करने की बढ़ी हुई जिम्मेदारी साझा करने के लिए अनिवार्य करता है।

जलवायु प्रतिबद्धताओं और भू–राजनीतिक स्थितियों को देखते हुए वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य में तेजी से बदलाव देखने को मिल रहा है। इसने ऊर्जा मूल्य श्रृंखलाओं में कम कार्बन पथों और डीकार्बोनाइजेशन पर एक संवाद और कार्रवाई की आवश्यकता की है। इसके अलावा, भारत इस 'अमृत काल' के दौरान ऊर्जा के लिए आयात पर अपनी निर्भरता को कम करने और ऊर्जा स्वतंत्रता की ओर बढ़ने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जैसा कि माननीय प्रधान मंत्री द्वारा घोषित किया गया है। सरकार सुलभता और वहनीयता के माध्यम से ऊर्जा न्याय सुनिश्चित करने की दिशा में प्रयास कर रही है जो निकट भविष्य में प्रति व्यक्ति ऊर्जा मांग को बढ़ाने की दिशा में प्रमुख प्रेरक होगा।

हमारी ऊर्जा प्रणाली को अधिक विश्वसनीय, पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी बनाने की दिशा में परिवर्तन आज की ऊर्जा नीति का एक केंद्रीय लक्ष्य है। ऊर्जा मांग मॉडलिंग ऊर्जा नियोजन, रणनीतियां तैयार करने और ऊर्जा नीतियों की सिफारिश करने के लिए एक आवश्यक घटक है। वैश्विक उतार–चढ़ाव, भू–राजनीतिक अनिश्चितताओं, ऊर्जा बाजार में उतार–चढ़ाव, जलवायु परिवर्तन की प्रतिबद्धताओं और कोविड –19 जैसे विपरीत परिस्थितियों के मद्देनजर यह और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, जिसने भारत के लिए ऊर्जा की मांग और अनुमानों के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता को पूरा कर दिया है। आने वाले वर्षों में भारत की ऊर्जा सुरक्षा और स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए ऊर्जा मॉडलिंग एक महत्वपूर्ण उपकरण है क्योंकि यह भारत के ऊर्जा संतुलन की योजना बनाने में एक महत्वपूर्ण निविष्ट होगा।

पीपीएसी वर्तमान काल में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय और अन्य हितधारकों के लिए प्रबुद्ध मंडल होने के नाते तेल और गैस क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये मुद्दे संवेदनशील उत्पादों के मूल्य निर्धारण, प्राकृतिक गैस मूल्य निर्धारण, घरेलू तेल और गैस उत्पादन में वृद्धि, आयात निर्भरता में कमी,

ईंधन के परिवहन के विपणन, ऊर्जा संक्रमण, नए ऊर्जा स्रोतों, घरेलू और वैश्विक अंतरिक्ष में अप्रत्याशित ऊर्जा विकास आदि से संबंधित हैं।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (MoPNG) के एक संबद्ध कार्यालय के रूप में पीपीएसी (PPAC) पिछले कुछ वर्षों से ऊर्जा मांग प्रक्षेपण मॉडलिंग का कार्य कर रहा है। इसका उपयोग मंत्रालय द्वारा 2040 तक भारत की रिफाइनिंग क्षमता आवश्यकताओं और विस्तार के लिए आवश्यक बाद के पूंजीगत व्यय के निर्धारण के लिए किया गया है। गतिशील ऊर्जा बाजारों को ध्यान में रखते हुए, पीपीएसी ने बदली हुई वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए चालू वित्तीय वर्ष में ऊर्जा मांग मॉडल को अद्यतन करने की पहल की है। यह गतिविधि भारत में नीति निर्माताओं और भारत के ऊर्जा आपूर्तिकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण होगी, जबकि दुनिया भर के समग्र ऊर्जा बाजारों पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा।

पीपीएसी अपनी जनशक्ति और अन्य संबंधित संगठनात्मक संरचनाओं के माध्यम से घरेलू मोर्चे पर ऊर्जा में बौद्धिक पूंजी के प्रति अपने बढ़ते किरणकेन्द्र और पुनर्मूल्यांकन के कारण पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगा।

Note :

Note :

हिंदी

मन की भाषा : जन-जन की भाषा
हिंदी में काम : देश के नाम!!

Analysis • Knowledge • Information

जारीकर्ता –
प्रशासन प्रभाग

सुझाव के लिए सम्पर्क करें :

पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार
स्कोप कॉम्प्लैक्स, द्वितीय मंजिल कोर–8, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
फोन : 011-24306191/92, 011-24361314
ईमेल – vinod.yadav2@ppac.gov.in